PG HN S2-04 (DSE)

TWO YEAR POSTGRADUATE PROGRAMME

(CBCS in Accordance with NEP 2020)

SEMESTER II

आधुनिक काव्यधारा

हिंदी

Padmanath Gohainbaruah School of Humanities

KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

विषय विशेषज्ञ

प्रोफ़ेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

प्रोफ़ेसर अमूल्य बर्मन, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय (सेवानिवृत्त विभागाधक्ष्य)

प्रोफ़ेसर भूषण पाठक, अध्यक्ष्य, बी. एस. कॉलेज, हाउली, बरपेटा, असम

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

एसएलएम् तैयारी टीम

Units	**Contributors**
इकाइयाँ	**योगदानकर्ताओं के नाम**
1–7	डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
8–9	राजू सिंह, शोधार्थी, असम विश्वविद्यालय, सिलसर
10–14	परीक्षित नाथ, सहायक अध्यापक, दुमदुमा महाविद्यालय

Editorial Team

Content : डॉ. नवकांत दास, सहायक अध्यापक एवं विभागाधक्ष्य, रंगापारा कॉलेज, शोणितपुर

Language : युगल चंद्र नाथ, सहायक अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, मरिगाँव महाविद्यालय

Structure & Format : डॉ. प्रांजल कुमार नाथ, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

January, 2025 **ISBN :**

This Self Learning Material (SLM) of the Krishna Kanta Handiqui State University is made available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-ShareAlike4.0 License (International) : http.//creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.

Headquarters: Patgaon, Rani Gate, Guwahati-781017
City Office: NH 37, Resham Nagar, Khanapara, Guwahati-781022 Web: www.kkhsou.in

CONTENTS

Page No.

इकाई 1 : भारत दुर्दशा (भारतेंदु) 7–13

भारतेंदु का सामान्य परिचय, भारत दुर्दशा (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 2 : पंचवटी (मैथिलीशरण गुप्त) 14–18

मैथिलीशरण गुप्त का सामान्य परिचय, पंचवटी (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 3 : ले चल मुझे भुलावा देकर (जयशंकर प्रसाद) 19–24

जयशंकर प्रसाद का सामान्य परिचय, ले चल मुझे भुलावा देकर (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 4 : तोड़ती पत्थर (निराला) 25–29

निराला का सामान्य परिचय, तोड़ती पत्थर (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 5 : ताज (सुमित्रानंदन पंत) 30–35

पंत का सामान्य परिचय, ताज (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 6 : क्या पूजा क्या अर्चन रे ! (महादेवी वर्मा) 36–42

महादेवी वर्मा का सामान्य परिचय, मैं नीर भरी दुःख की बदली (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 7 : बादल को घिरते देखा है (नागार्जुन) 43–51

नागार्जुन का सामान्य परिचय, बादल को घिरते देखा है (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 8 : आत्मपरिचय (हरिवंश राय बच्चन) 52–58

हरिवंश राय 'बच्चन' का सामान्य परिचय, आत्मपरिचय (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 9 : पुष्प की अभिलाषा (माखनलाल चतुर्वेदी) 59–62

माखनलाल चतुर्वेदी का सामान्य परिचय, पुष्प की अभिलाषा (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 10 : यह द्वीप अकेला (अज्ञेय) 63–68

अज्ञेय का सामान्य परिचय, यह द्वीप अकेला (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 11 : सहर्ष स्वीकारा है (मुक्तिबोध) **69-74**

मुक्तिबोध का सामान्य परिचय, सहर्ष स्वीकारा है (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 12 : फर्क नहीं पड़ता (केदार नाथ सिंह) **75-80**

केदार नाथ सिंह का सामान्य परिचय, फर्क नहीं पड़ता (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 13 : घर की याद (भवानी प्रसाद मिश्र) **81-87**

भवानी प्रसाद मिश्र का सामान्य परिचय, घर की याद (मूल पाठ), कविता का सारांश।

इकाई 14 : रोटी और संसद (धूमिल) **88-91**

'धूमिल' का सामान्य परिचय, रोटी और संसद (मूल पाठ), कविता का सारांश।

विषय परिचय

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल हमारी नई सोच, नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। इस काल में अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय क्रांति; आंतरिक और बाह्यिक दोनों ही दृष्टि से मानव जाति को प्रभावित तथा अपनी ओर आकर्षित करती आई है। साहित्य के क्षेत्र में भी इसका गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। गद्य विधा की भाँति काव्य विधा का भी बदलता हुआ रूप सामने आना एक लंबी यात्रा का परिणाम है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल सभी दृष्टियों से समृद्ध एवं संपन्न है। इस काल का प्रारंभ संवत 1900वीं से माना जाता है, जहाँ सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक आंदोलनों के फलस्वरूप हिंदी साहित्य में नवीन चेतना तथा विचारों का जन्म हुआ और साहित्य बहुआयामी विकास यात्रा की ओर अग्रसर होने लगा। अलग परिवेश और परिस्थितियों ने हिंदी काव्यधारा को नया मोड़, उर्वर धरा एवं नवीन रस प्रदान किया है, आगे भी प्रदान करता रहेगा। भारतेंदु काल से लेकर वर्तमान तक सृजित होने वाली अनगिनत कविताओं में से 'हिंदी काव्यधारा' में चौदह कवियों की कविताएँ संकलित हैं, जिनमें परंपरा से आगे जाकर नया भावबोध, नई अभिव्यक्ति के साथ-साथ नवीन मूल्यबोध और नित्य नवीन अन्वेषणात्मक शिल्प-विधान परिलक्षित होते हैं। सहज-सरल भाषा में लिखित प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक शिक्षार्थियों के उपयोगी हेतु मूल पाठ (कविता) के साथ-साथ, कवियों के जीवन परिचय, साहित्यिक दृष्टिकोण आदि को भी शामिल करने का भरसक प्रयास किया गया है। स्नातकोत्तर हिंदी द्वितीय छमाही का यह दूसरा वैकल्पिक पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में कुल चौदह इकाइयाँ हैं। यहाँ प्रत्येक इकाई में शीर्षकों के साथ-साथ, रचयिता के नाम को भी जोड़ा गया है, क्योंकि हिंदी साहित्य का स्वरूप बहुत ही व्यापक तथा कवियों के काव्य-संसार भी अधिक विशाल है। इस विशाल भंडार में से थोड़ा बहुत चुनकर पाठ्यक्रम में शामिल करना काफी तनाव और चुनौती भरा कार्य रहा है। फिर भी यहाँ कोशिश रही है कि चुने हुए जिन विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए अथवा जिन्हें पढने़ को दिया जाए, वे विद्यार्थी के लिए अनमोल निधि होगी और इससे विद्यार्थियों को काफी कुछ सीखने को मिलेंगे। पाठ्यक्रम में शामिल कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय-भावनात्मक, सांप्रदायिक सौमनस्य, देश-प्रेम का स्वर, सामाजिक मूल्यबोध, राजनैतिक सोच, आर्थिक विषमता, शोषक वर्गों के प्रति आक्रोश तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति, मानसिक अंतर्द्वन्द, लोगों की सुखद और त्रासद स्थिति, अध्यात्मवादी सोच, सांस्कृतिक सद्भावना, मानवतावादी विचार तथा अनेकता में एकता आदि को मूलत: स्थान प्राप्त हुआ है। पाठ्यक्रम में उल्लेखित चौदह इकाईयों में से प्रथम इकाई का शीर्षक है 'भारत दुर्दशा', जिसे लिखा है 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' ने। प्रस्तुत कविता भारतेंदु के लघु नाटक 'भारत दुर्दशा' से उद्धृत है। इस कविता के माध्यम से कवि ने निद्रामग्न भारत वासियों को संबोधित करते हुए देश की दुर्दशा पर चिंतन, मनन करने का आग्रह किया है। यह कविता पराधीन भारत की तत्कालीन सच्चाई को उजागर करती है। इकाई का दूसरा शीर्षक है 'पंचवटी'। मैथिलीशरण गुप्त के 'पंचवटी खंडकाव्य' की उन पंक्तियों को रखा गया है, जिनमें 'पंचवटी वन' के रात्रिकाल के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोरम एवं जीवंत चित्रण हुआ है। तीसरी और चौथी इकाईयों में क्रमश: जयशंकर प्रसाद की कविता 'ले चल मुझे भुलावा देकर' और निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' को शामिल किया गया है। दोनों कविताएँ हिंदी साहित्य में विशेष महत्व रखती हैं। पाँचवीं और छठवीं इकाईयों में क्रमश: सुमित्रानंदन पंत की कविता 'ताज' और 'महादेवी वर्मा की कविता 'मैं नीर भरी दु:ख की बदली' रखी गई हैं। 'ताज' कविता का विषय जीवन की सत्यता है, जबकि दूसरी कविता कवयित्री की विरह-वेदना तथा रहस्यवादी सोच लोगों के सामने लाती है। सातवीं इकाई है 'नागार्जुन' की कविता 'बादल को घिरते देखा है', जिसमें कवि ने अंतर्मन में घिरते बादलों के एकाध चित्र पाठकों के समक्ष रखा है। आठवीं इकाई में हरिवंश राय 'बच्चन' की कविता 'आत्मपरिचय' को शामिल किया गया है। इसमें व्यक्ति और संसार के घनिष्ठ संबंध और महत्व को दर्शाया गया है। नौवीं इकाई है

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा'। इसके माध्यम से कवि ने देश के नौजवानों को संबोधित कर पुष्प की चाहत और समर्पण भावना के अनुरूप देशप्रेम तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का संदेश दिया है ताकि पराधीनता की जंजीरों को तोड़ देश को आजाद किया जा सके। इकाई संख्या दसवीं में अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक सोच को शिक्षार्थियों के सामने रखा गया है, जिसका शीर्षक है 'यह द्वीप अकेला'। अज्ञेय की प्रस्तुत कविता में व्यक्ति और समाज के संबंधों को दर्शाते हुए व्यक्ति को समष्टि में समाहित करने का संदेश मुखर हुआ है, जिसे समझने के लिए विद्यार्थी को कविता में अंतर्निहित भावों के तह तक जाने होंगे। ग्यारहवीं और बारहवीं इकाईयाँ मुक्तिबोध और केदार नाथ सिंह से संबंधित हैं। एक का शीर्षक है 'सहर्ष स्वीकारा है' और दूसरा है 'फर्क नहीं पड़ता'। तेरहवीं इकाई का शीर्षक है 'घर की याद', जिसे भवानी प्रसाद मिश्र ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जेल में रहते समय लिखा था। चौदहवीं इकाई में 'धूमिल' की 'रोटी और संसद' शीर्षक कविता को शामिल किया गया है। प्रस्तुत कविता देश की नेता और राजनीतिक स्थिति पर करारा व्यंग्य है।

इकाई 1 : भारत दुर्दशा (भारतेंदु)

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 भारतेंदु का सामान्य परिचय
1.4 भारत दुर्दशा (मूल पाठ)
1.5 कविता का सारांश
1.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
1.7 अधिक जानने के लिए पढ़े
1.8 अभ्यास प्रश्न

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भारतेंदु के जीवन और साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- 'भारत दुर्दशा' कविता के भावपक्ष को जान सकेंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो पाएंगे।

1. 2 प्रस्तावना

रीतिकाल की विकृत सामन्ती संस्कृति को छोड़ता हुआ आधुनिक काल के नवीन बीज रोपण करनेवाले भारतेंदु को आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु को हिंदी गद्य साहित्य के जनक भी माने जाते हैं। उन्होंने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण तथा जनजागरण आदि को अपनी रचना का विषय बनाया। उल्लेखित कविता उनके नाटक 'भारत दुर्दशा' से ली गयी है। प्रस्तुत कविता को समझने से पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

1. 3 भारतेंदु का सामान्य परिचय

जीवन परिचय –

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितंबर, सन 1850 को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पिता गोपालचंद्र 'गिरधरदास' एक अच्छे कवि थे। गोपालचंद्र 'गिरधरदास' उपनाम से कविता लिखा करते थे। उनके पूर्वज अंग्रेज़ों के भक्त थे, उनकी ही कृपा से वे धनवान हुए थे। हरिश्चंद्र पाँच वर्ष के थे तभी उनकी माता की

और दस वर्ष की उम्र में पिता की मृत्यु हो गयी थी। इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के स्नेह से भारतेन्दु वंचित हो गया था। विमाता ने खूब सताया। भारतेंदु को बचपन का सुख नहीं मिला। शिक्षा कहने के लिए होती रही। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतन्त्र रूप से देखने, सोचने-समझने की आदत का विकास होने लगा। पढ़ाई की विषय-वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वींस कॉलेज, बनारस में प्रवेश लिया, तीन-चार वर्षों तक कॉलेज आते-जाते रहें पर वहाँ से मन बार-बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी, प्रभाव ग्रहण क्षमता उनका अद्भुत था। इसलिए परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढ़े-लिखे और प्रसिद्ध लेखक राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' थे, भारतेन्दु शिष्य भाव से उनके वहाँ जाते थे। उन्हीं से भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अंग्रेजी सीखी। अंग्रेजी तथा हिंदी के अलावा भारतेन्दु ने स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषाएँ सीखी थी।

उनको काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत में मिली थी। उन्होंने पांच वर्ष की अवस्था में ही निम्नलिखित दोहा बनाकर अपने पिता को सुनाया और सुकवि होने का आशीर्वाद प्राप्त किया-

'लै ब्योढ़ा ठाढ़े भए श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर की सेन को हनन लगे भगवान॥'

परिस्थितिवश जीवन काल में धन के अत्यधिक व्यय से भारतेंदु ऋणी बन गए और दु:चिंताओं के कारण उनका शरीर शिथिल होता गया। परिणामस्वरूप सन् 1885 की अल्पायु में ही उन्होंने मृत्यु को अपना लिया था।

साहित्यिक परिचय -

भारतेन्दु के वृहत साहित्यिक योगदान के कारण ही सन् 1857 से 1900 तक के काल खंड को' भारतेन्दु युग' के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, ''भारतेन्दु अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो पद्माकर, द्विजदेव की परम्परा में दिखाई पड़ते थे, तो दूसरी ओर बंगदेश के माइकेल और हेमचन्द्र की श्रेणी में। प्राचीन और नवीन का सुन्दर सामंजस्य भारतेन्दु की कला का विशेष माधुर्य है।''

पंद्रह वर्ष की अवस्था से ही भारतेन्दु ने साहित्य सेवा प्रारम्भ कर दी थी। अठ्ठारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने 'कविवचनसुधा' नामक पत्रिका निकाली, जिसमें उस समय के बड़े-बड़े विद्वानों की रचनाएँ छपती थीं । उन्होंने सन् 1868 में 'कविवचनसुधा', सन् 1873 में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' और सन् 1874 में स्त्री शिक्षा के लिए 'बाला बोधिनी' नामक पत्रिकाएँ निकाली। साथ ही उनके समांतर साहित्यिक संस्थाएँ भी खड़ी की। वैष्णव भक्ति के प्रचार के लिए उन्होंने 'तदीय समाज' की स्थापना की थीं। राजभक्ति प्रकट करते हुए भी, अपनी देशभक्ति की भावना के कारण उन्हें अंग्रेजी हुकूमत का कोपभाजन बनना पड़ा। उनकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने सन् 1880 में उन्हें 'भारतेंदु' (भारत की चंद्रमा) की उपाधि प्रदान की। हिन्दी साहित्य को भारतेन्दु की देन भाषा तथा साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में हैं। भाषा के क्षेत्र में उन्होंने

खड़ीबोली के उस रूप को प्रतिष्ठित किया जो उर्दू से भिन्न है और हिन्दी क्षेत्र की बोलियों का रस लेकर संवर्धित हुआ है। इसी भाषा में उन्होंने अपने सम्पूर्ण गद्य साहित्य की रचना की। साहित्य सेवा के साथ-साथ भारतेंदु जी की समाज-सेवा भी चलती रही। उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। दीन-दुखियों, साहित्यिकों तथा मित्रों की सहायता करना वे अपना कर्तव्य समझते थे। उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

मौलिक नाटक-

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' (1873 ई. प्रहसन), 'पांचवें पैगंबर' (1873), 'प्रेमजोगिनी' (1875, प्रथम अंक में चार गर्भांक, नाटिका), 'भारत दुर्दशा' (1880, ब्रजरत्नदास के अनुसार 1876, नाट्य रासक), लास्य रूपक 'श्री चंद्रावली' (1876, नाटिका), 'विषस्य विषमौषधम्' (1876, भाण), 'अंधेर नगरी' (1881, प्रहसन), 'नीलदेवी' (1881, ऐतिहासिक गीति रूपक) 'सती प्रताप' (1883, अपूर्ण, केवल चार दृश्य, गीतिरूपक हैं जिसे बाबू राधाकृष्णदास ने पूर्ण किया।)



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. हिंदी गद्य साहित्य के जनक के रूप में हम किसको जानते हैं?

प्रश्न संख्या 2. उल्लेखित कविता भारतेंदु के किस नाटक से ली गयी है?

प्रश्न संख्या 3. 'अंधेर नगरी' किसकी रचना है? इस प्रहसन को नाटक मानना कहाँ तक उचित है?

अनूदित नाटक -

विद्यासुन्दर (संस्कृत 'चौरपंचाशिका' के यतीन्द्रमोहन ठाकुर कृत बँगला संस्करण का हिंदी अनुवाद), पाखण्ड विडम्बन (कृष्ण मिश्र कृत 'प्रबोधचंद्रोदय' नाटक के तृतीय अंक का अनुवाद), धनंजय विजय (व्यायोग, कांचन कवि कृत संस्कृत नाटक का अनुवाद), कर्पूर मंजरी (सट्टक, राजशेखर कवि कृत प्राकृत नाटक का अनुवाद), भारत जननी (नाट्यगीत, बंगला की 'भारतमाता' के हिंदी अनुवाद पर आधारित), मुद्राराक्षस (विशाखदत्त के संस्कृत नाटक का अनुवाद), दुर्लभ बंधु (शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद)

निबंध संग्रह-

नाटक, कालचक्र (जर्नल), लेवी प्राण लेवी, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है, कश्मीर कुसुम, जातीय संगीत, संगीत सार, हिंदी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा

काव्यकृतियाँ-

भक्तसर्वस्व, प्रेममालिका, कार्तिक स्नान, वैशाख महात्म्य, प्रेम सरोवर, प्रेमाश्रुवर्षण, जैन कुतूहल, प्रेम सतसई शृंगार, प्रेम माधुरी, प्रेम-तरंग, उत्तरार्द्ध भक्तमाल, प्रेम-प्रलाप, होली,

मधु मुकुल, राग-संग्रह, वर्षा-विनोद, विनय प्रेम पचासा, फूलों का गुच्छा (खड़ीबोली काव्य, 1882), प्रेम फुलवारी, कृष्णचरित्र, प्रात: स्मरण, उरेहना, तन्मय लीला, दानलीला, रानी छद्म लीला, संस्कृत लावनी, बसंत, मुंह दिखावनी, उर्दू का स्यापा, प्रबोधिनी, नये ज़माने की मुकरी, सुमनांजलि, बन्दर सभा (हास्य व्यंग्य), बकरी विलाप (हास्य व्यंग्य), विजय वल्लरी, विजयिनी विजय वैजयंती, जातीय संगीत, रिपुनाष्टक।

कहानी-

अद्भुत अपूर्व स्वप्न

यात्रा वृत्तान्त-

सरयूपार की यात्रा, लखनऊ

आत्मकथा

एक कहानी- कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

उपन्यास-

पूर्णप्रकाश, चन्द्रप्रभा



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 4. भारतेंदु ने शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद किस नाम से किया?

प्रश्न संख्या 5. निम्नलिखित में से सही नहीं है-

क) फूलों का गुच्छा - खड़ीबोली काव्य

ख) बन्दर सभा - हास्य व्यंग्य काव्य

ग) बकरी विलाप - हास्य व्यंग्य काव्य

घ) मधु मुकुल - अपभ्रंश काव्य

1.4 भारत दुर्दशा (मूल पाठ)

रोवहु सब मिलि के आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई
सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो॥
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो।
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो॥
अब सबके पीछे सोई परत लखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई

जहँ भए शाक्य हरिचंद नहुष ययाती।
जहँ राम युधिष्ठिर वासुदेव सर्याती॥
जहँ भीम करन अर्जुन की छटा दिखाती।
तहँ रही मूढ़ता कलह अविद्या राती॥
अब जहँ देखहु तहँ दु:ख ही दु:ख दिखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई

लरि वैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी।
करि कलह बुलाई जवन सैन पुनि भारी॥
तिन नासी बुधि बल विद्या धन बहु वारी।
छाई अब आलस कुमति कलह अंधियारी॥
भए अंध पंगु सब दीन हीन बिलखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई

अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी॥
ताहू पै महँगी काल रोग विस्तारी।
दिन-दिन दूनो दु:ख ईस देत हा हारी॥
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई



1.5 कविता का सारांश

यह कविता तत्कालीन भारत की ख़राब स्थितियों को दर्शाता है, साथ ही विदेशियों ने हमें किस तरह खोखला कर दिया था; उसका भी वर्णन प्रस्तुत कविता में उपलब्ध है। कविता का मुख्य विषय देश प्रेम है और इसमें भारतेन्दु समस्त भारतवासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि इस समय अंग्रेजों के राज में भारत की जो दुर्दशा हो चुकी है मुझसे देखी नहीं जाती और जिस पर हम सभी भारतियों को चिंतन करना जरुरी है। भारतेन्दु ने भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का उल्लेख करते हुए वर्तमान से उसकी तुलना की है और कहा है कि हम सभी का इस समय यही कर्त्तव्य है कि वर्तमान को भी हमें अपने इतिहास की तरह ही महान बनाए रखना है।

भारतेंदु ने कहा है कि भारतवर्ष एक ऐसा देश है, जिसने सबसे पहले पूरी दुनिया को ज्ञान और विद्या की रौशनी प्रदान की थी। ईश्वर ने संस्कृति-सभ्यता के साथ-साथ आर्थिक,

धन, मान, सम्पदा आदि से भी इस देश को सम्पन्न बनाया है। मगर अब देश डूबता जा रहा है। यह देश केवल कागज की टुकड़ा या खत नहीं है, एक राष्ट्र है, भारती माँ , जिसके मोहक रूप, रंग से पूरी दुनिया आकर्षित हो जाते थे। ताकतवर और ज्ञानमयी देश का ऐसा पतन, आँखों में आंसू ला देता है। भारतीय गौरवशाली परम्परा में त्यागी बुद्ध, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर जैसा धर्मराज, राम जैसा न्यायशील, दानवीर कर्ण, अर्जुन जैसा धनुर्धर पैदा होने के बाद भी देश की जनता डर रहे हैं। इसी कारण कवि हताश है। उनके अनुसार रौशनी अब खत्म हो गयी है। यहाँ के लोग पंगु हो गए हैं, अँधे बन गए हैं। भारतेंदु ने सभी को आग्रह किया है कि सब एक जुट हो जाएँ, विदेशियों के खिलाफ आवाज उठायें। बेवजह जैन, बौद्ध के नाम पर धार्मिक, छुआछुट की लड़ाई न लड़े। लोगों की आपसी लड़ाई का अवसर ग्रहण करता हुआ विदेशियों ने यहाँ कब्जा कर लिया है। लोग वेवश और हताश हो गए हैं।

लेकिन इसी के साथ-साथ भारतेंदु ने अंग्रेजों की प्रशंसा भी किया है। हा, उनके आने से यहाँ के लोगों को यातायात, तथा किस्म-किस्म की जो आधुनिक सुबिधाएँ प्राप्त हो रही हैं, लेकिन इसीके आड़ में भारत की सम्पत्ति को जिस तरह से लूटा जा रहा है उस पर ध्यान देने की भी बात कही है। असल में भारतेन्दु ने अशिक्षा, धार्मिक भेदभाव, अकर्मण्यता आदि की ओर इशारा करते हुए कहा है कि अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन में भारत दिन व दिन गरीब होता जा रहा है तथा देश में महंगाई, अकाल और बीमारियों ने पैर पसार लिया है। भारत की इस दुर्दशा को भारतीयों के सामने रखकर उनकी यही अपेक्षा है कि सब में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हो जाय और सभी इसी दशा को सुधारने में अपना योगदान दें!

1.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : हिंदी गद्य साहित्य के जनक के रूप में हम भारतेंदु को जानते हैं।

प्रश्न 2 का उत्तर : 'भारत दुर्दशा' नाटक से।

प्रश्न 3 का उत्तर : 'अंधेर नगरी' भारतेंदु की रचना है। असल में यह एक प्रहसन है। लेकिन प्रहसन होने के बावजूद इसे नाटक माना जाता है। इस उत्तर के लिए 'अंधेर नगरी' की मूल किताब को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 4 का उत्तर : 'दुर्लभ बंधू' नाम से किया।

प्रश्न 5 का उत्तर : पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।



1.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. भारत दुर्दशा- भारतेंदु हरिश्चंद्र, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।



1.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. विषस्य विषमौषधम् किस प्रकार का नाटक है?
2. भारतेंदु द्वारा लिखित खड़ीबोली की किसी एक कृति का नाम उल्लेख कीजिए?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. हिंदी साहित्य को भारतेंदु की देन पर विचार करते हुए एक लेख प्रस्तुत कीजिए।
2. आधुनिक गद्य के जनक भारतेंदु की काव्यिक विशेषताएँ प्रस्तुत कीजिए।
3. 'भारत दुर्दशा' कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए

   अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
   पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी॥
   ताहू पै महँगी काल रोग विस्तारी।
   दिन-दिन दूनो दु:ख ईस देत हा हारी॥

*** ***** ***

इकाई 2 : पंचवटी (मैथिली शरण गुप्त)

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 मैथिलीशरण गुप्त का सामान्य परिचय

2.4 पंचवटी (मूल पाठ)

2.5 कविता का सारांश

2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

2.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

2.8 अभ्यास प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- 'पंचवटी' से उद्धृत कविता को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से रूबरू हो पाएंगे।

2.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। उन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास में खड़ीबोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। उनको साहित्य जगत में 'दद्दा' के नाम से संबोधित किया जाता था। उनकी कृति 'भारत-भारती' भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' नाम दिया था। इस महान व्यक्तित्व को सन् 1954 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण सम्मान से विभूषित किया गया। आइए, अब उनके जीवन के बारे में अध्ययन करते हैं।

2.3 मैथिलीशरण गुप्त का सामान्य परिचय

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे तथा भारतीय संस्कृति के नवीनतम रूप की कामना करते थे। काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवादी विचारधारा को प्रधानता देनेवाले इस मनीषी का जन्म ई. 3 अगस्त सन् 1886 में पिता सेठ रामचरण गुप्त और माता काशी बाई की गर्भ में उत्तर प्रदेश, झांसी के चिरगांव में हुआ था।

मैथिलीशरण गुप्त की माता और पिता दोनों ही वैष्णव थे। विद्यालय में खेलकूद में अधिक ध्यान देने के कारण उनकी पढ़ाई अधूरी ही रह गयी थी। अत: घर में ही हिन्दी, बंगला, संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। मुंशी अजमेरी जी ने मैथिलीशरण गुप्त का मार्गदर्शन किया। उन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ब्रजभाषा में 'कनकलता' नाम से कविता लिखना आरम्भ किया और बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आये। उनकी कविताएँ खड़ीबोली की मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी।

सन् 1948 में आगरा विश्वविद्यालय उन्हें डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1952-1964 तक वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सन् 1962 ई. में उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया तथा हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वारा उन्हें डी.लिट. जैसे सम्मान से सम्मानित भी किया गया। वे वहाँ मानद प्रोफेसर के रूप में नियुक्त भी हुए थे। इसी वर्ष प्रयाग में 'सरस्वती' की स्वर्ण जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता गुप्त जी ने ही की। 12 दिसम्बर, सन् 1964 को दिल का दौरा पड़ा और साहित्य का जगमगाता तारा उसी दिन अस्त हो गया। 78 वर्ष की आयु में दो महाकाव्य, 19 खण्डकाव्य, काव्यगीत, नाटक आदि लिखकर हिंदी साहित्य भंडार को उन्होंने समृद्ध किया। उनकी रचनाएँ हैं-

काव्य- साकेत 1931, यशोधरा 1933

खण्डकाव्य- जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, द्वापर, सिद्धराज, नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान, कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल, जय भारत, युद्ध, झंकार, पृथ्वीपुत्र, वक संहार, शकुंतला, विश्व वेदना, राजा प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला, प्रदक्षिणा, दिवोदास, भूमि-भाग।

नाटक - रंग में भंग 1909, राजा-प्रजा, वन वैभव, विकट भट, विरहिणी, वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री, स्वदेश संगीत, हिड़िम्बा, हिन्दू, चंद्रहास।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. राष्ट्रकवि के रूप में हम किसे जानते हैं?

प्रश्न संख्या 2. निम्नलिखित में से खंड काव्य हैं-

1) जयद्रथ-वध
2) भारत-भारती
3) पंचवटी
4) उल्लेखित सभी

प्रश्न संख्या 3. गुप्तजी की कविताएँ किस मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी?

2.4 पंचवटी (मूल पाठ)

(1)

चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रहीं हैं जल थल में,
स्वच्छ चान्दनी बिछी हुई है अवनि और अम्बरतल में।
पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से,
मानों झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोंकों से॥

(2)

पंचवटी की छाया में है, सुन्दर पर्ण-कुटीर बना,
जिसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर, धीर-वीर निर्भीकमना,
जाग रहा यह कौन धनुर्धर, जब कि भुवन भर सोता है?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा, बना दृष्टिगत होता है॥

(3)

किस व्रत में है व्रती वीर यह, निद्रा का यों त्याग किये,
राजभोग्य के योग्य विपिन में, बैठा आज विराग लिये।
बना हुआ है प्रहरी जिसका, उस कुटीर में क्या धन है,
जिसकी रक्षा में रत इसका, तन है, मन है, जीवन है॥

(4)

मर्त्यलोक-मालिन्य मेटने, स्वामि-संग जो आई है,
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह, कुटी आज अपनाई है।
वीर-वंश की लाज यही है, फिर क्यों वीर न हो प्रहरी,
विजन देश है निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी॥

(5)

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा;
है स्वच्छन्द-सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं, नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से, कितने शांत और चुपचाप।

शब्दार्थ : अवनन-धरती, अम्बरतले-आकाश, लशला-पत्थर, ननभीकमना-तनभयय मनवल, ननयनत-भववतव्यत, भाग्य।



2.5 कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता में पंचवटी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है। रात का समय है आकाश में चाँद निकला हुआ है। चन्द्रमा की सुंदर ज्योतिर्मय किरणे पृथ्वी पर सुशोभित हो रही हैं। नदियों, तालाबों के जल में चंद्रमा की किरणों की आभा बड़ी मनोहर लग रही है। चाँदनी का स्वच्छ निर्मल प्रकाश आकाश से लेकर धरती तक फैला हुआ है। जमीन में हरी-हरी घास उगी हुई है, जिसकी छोटी-छोटी उठी हुई नोंको को देखने से लगता है- 'मानो प्रसन्नता के अतिरेक से पृथ्वी को रोमांच हो आया है। हवा के मन्द झोंको से हिलते पेड़-पौधों को देखने से प्रतीत होता है, मानो वे आनन्द से झूम रहे हैं।

पाँच वटवृक्षों की छाया में घास-फूस की सुंदर झोंपड़ी बनी हुई है। झोपड़ी के सामने साफ सुथरी चट्टान पर एक बलवान, साहसी और निडर योद्धा, हाथ में धनुष-बाण लेकर बैठा है। आधी रात के समय, जब सारी दुनिया गहरी नींद में सो रही थी, यह युवक जाग रहा है; उसे देखने से लगता है, जैसे सांसारिक सुखों में लिप्त रहने वाले कामदेव ने योगी का वेश बना लिया है। यहाँ योगी वेश में स्थित भोगी लक्ष्मण को कामदेव (सौंदर्य की देवता) से उपमित किया गया है। लक्ष्मण सुंदर युवक है। लक्ष्मण ने अपने हाथों में लकड़ी का धनुष और कामदेव अपने हाथों में फूलों का धनुष लेकर चलते थे।

कुटी के बाहर पहरा देने वाला यह वीर युवक निंद्रा का त्याग करके; रातभर जागकर अपने किसी संकल्प का निर्वाह कर रहा है। उसने कौन-सा व्रत ले रखा, जिसका वह इस प्रकार पालन कर रहा है। लक्ष्मण राजोचित सुखों का भोग करने के योग्य है, फिर भी उसने उन सुखों को स्वेच्छा से त्यागकर वैराग्य ले रखा है। आखिर उस कुटिया में ऐसा कौन सा अमूल्य धन छिपा हुआ है, जिसकी रक्षा के लिए वह पहरा दे रहा है और अपने तन-मन तथा जीवन को उसमें अनुरक्त कर दिया है।

संसार का पाप, दोष, दु:ख-दैन्य मिटाने के लिए अपने पति श्रीराम के साथ जो सीता जी भी आयी हैं, वे तीनों लोक की स्वामी हैं। संसार का सारा धन, ऐश्वर्य, उन्ही से उत्पन्न हुआ हैं, साक्षात लक्ष्मी ही जंगल में स्थित कुटिया में निवास करती है। रघुवंश की मर्यादा है, जब कुलवधू असुरक्षित क्षेत्र में निवास करे, तो उसकी सुरक्षा की जाए। फिर रघुवंश के वीर जब उनके साथ हो, तो वह प्रहरी बनकर उसकी रक्षा क्यों न करे? एक तो सुनसान जंगल, दूसरे अर्धरात्रि का समय और तीसरे राक्षसों द्वारा क्षण-क्षण की जाने वाली छल कपट लीला का भय। इसीलिए यह वीर तीनों लोक की देवी लक्ष्मी की रक्षा करने के लिए कुटी के बाहर पहरा दे रहा है। निर्मल चाँदनी का प्रकाश कितना सुंदर और मनमोहक लग रहा है, रात्रिकालीन वातावरण कितना शांत और नीरव है, मन्द और सुगन्ध पवन प्रवाहित हो रहा है, चारों दिशाओं में सुख और

आनन्द का वातावरण है। समय चक्र अब अपने सभी कार्य कर रहा है लेकिन वे सब अव्यक्त भाव से होते हैं। देखने में सब कुछ स्थिर सा लगता है, किन्तु कालचक्र का कोई भी काम रुके नहीं हैं।



2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : मैथिलीशरण गुप्त को।

प्रश्न 2 का उत्तर : जानने के लिए पढ़े मैथिलीशरण गुप्त का सामान्य परिचय के कथ्य को।

प्रश्न 3 का उत्तर : सरस्वती में प्रकाशित हुई थी।



2.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. पंचवटी (खंड-काव्य), मैथिलीशरण गुप्त, भारतीय साहित्य संग्रह।



2.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. मैथिलीशरण गुप्त की कविता किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी ?
2. प्रस्तुत कविता में किसका वर्णन किया गया है ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. हिंदी साहित्य में राष्ट्रकवि के रूप में मैथिलीशरण गुप्त का परिचय दीजिए।
2. 'पंचवटी' से क्या तापर्य है ? मैथिलीशरण गुप्त ने उल्लेखित कविता के माध्यम से प्रकृति का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है'- स्पष्ट कीजिए।
3. उल्लेखित कविता का भावार्थ लिखिए।
4. व्याख्या प्रस्तुत कीजिए

   किस व्रत में है व्रती वीर यह, निद्रा का यों त्याग किये,
   राजभोग्य के योग्य विपिन में, बैठा आज विराग लिये।
   बना हुआ है प्रहरी जिसका, उस कुटीर में क्या धन है,
   जिसकी रक्षा में रत इसका, तन है, मन है, जीवन है॥

*** ***** ***

इकाई 3 : ले चल मुझे भुलावा देकर (जयशंकर प्रसाद)

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 जयशंकर प्रसाद का सामान्य परिचय

3.4 ले चल मुझे भुलावा देकर (मूल पाठ)

3.5 कविता का सारांश

3.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

3.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

3.8 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- जयशंकर प्रसाद के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे
- 'ले चल मुझे भुलावा देकर' कविता को पढ़ कर उसका रस ले पायेंगे
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो पायेंगे।

3.2 प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीत लिखनेवाले श्रेष्ठ कवि थे। सुमित्रानन्दन पंत इसे 'हिंदी में ताजमहल के समान' मानते हैं। शिल्पविधि, भाषासौष्ठव एवं भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ी बोली के किसी भी काव्य से नहीं की जा सकती है। जयशंकर प्रसाद ने अपने दौर के पारसी रंगमंच की परंपरा को अस्वीकारते हुए भारत के गौरवमय अतीत के अनमोल चरित्रों को सामने लाते हुए अविस्मरनीय नाट्यकृतियों की रचना की। उनके नाटक 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त' आदि में भारतीय स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानों एक सोये हुए देश को जागने की प्रेरणा देते थे। उनके नाटकों में देशप्रेम का स्वर अत्यंत दर्शनीय है, इन नाटकों में कई सुंदर और प्रसिद्ध गीत मिलते हैं। 'हिमाद्रि तुंग शृंग से', 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' जैसे उनके नाटकों के गीत सुप्रसिद्ध रहे हैं।

जयशंकर प्रसाद की कविता 'ले चल मुझे भुलावा देकर' शीर्षक कविता एक ऐसे सत्य को उदभाषित करते हैं जिसके दार्शनिक भाव-बोध की चाह हर संवेदनशील हृदय की होती है। आइए, कविता को पढ़ने से पहले प्रसाद जी के बारे में थोड़ा जान लेते हैं।

3.3 जयशंकर प्रसाद का सामान्य परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म -

छायावाद के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ था। उस समय खड़ी बोली तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य किशोरावस्था में पदार्पण कर रहे थे। कवि के पितामह शिव रत्न 'साहु' वाराणसी के अत्यन्त प्रतिष्ठित नागरिक थे और एक विशेष प्रकार की सुरती (तम्बाकू) बनाने के कारण 'सुँघनी साहु' के नाम से विख्यात थे। उनके दानशीलता सर्वविदित थे जहाँ विद्वानों कलाकारों का समादर होता था। जयशंकर प्रसाद के पिता देवीप्रसाद साहु ने भी अपने पूर्वजों की परम्परा का पालन किया। इस परिवार की गणना वाराणसी के अतिशय समृद्ध घरानों में थी और धन-वैभव का कोई अभाव न था। प्रसाद का कुटुम्ब शिव के उपासक थे। माता-पिता ने उनके जन्म के लिए अपने इष्टदेव से मन्नत माँगी थी। झारखण्ड के वैद्यनाथ धाम से लेकर उज्जयिनी के महाकाल की आराधना के फलस्वरूप पुत्र जन्म स्वीकार कर लेने के कारण शैशव में जयशंकर प्रसाद को 'झारखण्डी' कहकर पुकारा जाता था।

शिक्षा - जयशंकर प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही आरम्भ हुआ। संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, उर्दू के लिए घर में ही अलग-अलग शिक्षक नियुक्त हुए थे। इनमें रसमय सिद्ध प्रमुख थे। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के लिए दीनबन्धु ब्रह्मचारी शिक्षक थे। कुछ समय के बाद स्थानीय क्वीन्स कॉलेज में प्रसाद का नाम लिख दिया गया, वहाँ पर वे आठवीं कक्षा तक ही पढ़ सके। प्रसाद एक अध्यवसायी व्यक्ति थे और नियमित रूप से अध्ययन करते थे।

रचनाएँ - कहा जाता है कि नौ वर्ष की अवस्था में ही जयशंकर प्रसाद ने 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर अपने गुरु रसमय सिद्ध को दिखाया था। उनकी आरम्भिक रचनाएँ यद्यपि ब्रजभाषा में मिलती हैं, पर क्रमशः वे खड़ीबोली को अपनाते गये। प्रसाद की ही प्रेरणा से सन् 1909 ई. में उनके भांजे अम्बिका प्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में 'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। प्रसाद इसमें नियमित रूप से लिखते रहे और उनकी आरम्भिक रचनाएँ इसी के अंकों में देखे जाते हैं।

उनकी रचना संग्रह विभिन्न साहित्यिक विधाओं में जैसे कविता, उपन्यास, नाटक और निबन्ध सभी में प्रतिफलित हुई, किन्तु इन विधाओं में उनकी प्रतिभा कविकर्म में सर्वत्र मुखरित रहा। वस्तुतः एक कवि की गहन संवेदन एवं कल्पनाशीलता ने ही साहित्य की अन्य विधाओं में उन्हें विशिष्ट और व्यक्तिगत प्रयोग करने के लिये अनुप्रेरित किया। उनकी कहानी-कला सर्वथा पृथक् और मौलिक रही है। कथा संगठन, पात्रों के चरित्र-चित्रण, वातावरण, संवाद योजना, भाषा-सौष्ठव, वाक्यगठन का तर्ज सर्वथा निजी हैं। उनके नाटकों में भी इसी प्रकार के अभिनव और श्लाघ्य प्रयोग मिलते हैं।

कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास-सभी क्षेत्रों में प्रसाद जी एक नवीन 'धारा' और

नवीन जीवन-दर्शन की स्थापना करने में सफल हुए हैं। वे 'छायावाद' के संस्थापकों और उन्नायकों में से एक हैं। वैसे सर्वप्रथम कविता के क्षेत्र में इस नव-अनुभूति के वाहक वे रहे हैं और प्रथम विरोध भी उन्हीं को सहना पड़ा था। भाषा शैली और शब्द-विन्यास के निर्माण के क्षेत्र में जितना संघर्ष प्रसाद जी को करना पड़ा है, उतना दूसरों को नहीं।

कालक्रम के अनुसार 'चित्राधार' प्रसाद का प्रथम संग्रह है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1918 ई. में हुआ। यह कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध सभी का संकलन है। जिसकी भाषा ब्रज तथा खड़ी बोली दोनों ही थी। लगभग दस वर्ष के बाद सन् 1928 ई. में जब इसका दूसरा संस्करण आया, इसमें ब्रजभाषा की रचनाएँ ही रखी गयीं और इसमें प्रसाद की आरम्भिक कथाएँ भी संकलित हुए। 'चित्राधार' की कविताओं को दो प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है। पहली उन आख्यानक कविताएँ अथवा कथा काव्यों के हैं, जिनमें प्रबन्धात्मकता है। अयोध्या का उद्धार, वनमिलन और प्रेमराज्य शीर्षक कथाकाव्य इसमें संग्रहीत हैं। 'अयोध्या का उद्धार' में लव द्वारा अयोध्या को पुन: बसाने की कथा का उल्लेख हैं। इसकी प्रेरणा कालिदास का 'रघुवंशम' है। 'वनमिलन' में 'अभिज्ञानशकुन्तलम' की प्रेरणा है। 'प्रेमराज्य' की कथा ऐतिहासिक है। 'चित्रधार' की स्फुट रचनाएँ प्रकृतिविषयक तथा भक्ति और प्रेमसम्बन्धिनी हैं। 'कानन कुसुम' प्रसाद की खड़ीबोली की कविताओं का प्रथम संग्रह है। यद्यपि इसके प्रथम संस्करण में ब्रज और खड़ी बोली दोनों की कविताएँ हैं, पर दूसरे संस्करण सन् (1918 ई.) तथा तीसरे संस्करण सन् (1929 ई.) में एकाध परिवर्तन दिखायी देते हैं। अब उसमें केवल खड़ीबोली की कविताएँ संकलित हैं। कवि के अनुसार यह 1966 वि. (सन् 1909 ईसवी) से 1974 वि. (सन् 1917 ईसवी) तक की कविताओं का संग्रह है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. जयशंकर प्रसाद को 'हिंदी में ताजमहल के समान' माननेवाले विद्वान कौन थे ?

प्रश्न संख्या 2. निम्नलिखित में से सही नहीं है-

1) 'अयोध्या का उद्धार' - कालिदास के 'रघुवंश' से संबंधित।

2) 'वनमिलन' - 'अभिज्ञानशकुन्तलम' से संबंधित है।

3) 'प्रेमराज्य' की कथा - स्वतंत्रता और भौतिक कथा से संबंधित है।

4) 'चित्रधार' - प्रकृति, भक्ति और प्रेम से संबंधित है।

प्रश्न संख्या 3. 'प्रसाद' की खड़ीबोली कविताओं का प्रथम संग्रह कौनसा है ?

उनकी रचनाएँ निम्न रूप से देखे जा सकते हैं-

काव्य -

कामायनी (महाकाव्य तथा प्रसाद की अक्षय निधि है),

आँसू (कवि के वियोगपरक उद्‌गारों का समाहार),

लहर (मुक्तक रचनाओं का संग्रह),

झरना (छायावादी शैली में रचित कविता-संग्रह),

चित्राधार (ब्रज में रचित कविता- संग्रह)

गद्य रचनाएँ -

प्रसाद जी की प्रमुख गद्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

नाटक - चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूँट, विशाख, अजातशत्रु आदि।

कहानी संग्रह - प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आँधी तथा इन्द्रजाल आदि।

उपन्यास - तितली और कंकाल

निबन्ध - काव्य और कला

मृत्यु - जयशंकर प्रसाद का देहावसान 15 नवम्बर, सन 1937 ई. में हुआ।

प्रसाद जी भारत के गौरवशाली अतीत के जीवित वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे।

3.4 ले चल मुझे भुलावा देकर (मूल पाठ)

ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक! धीरे-धीरे!
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अम्बर के कानों में गहरी,
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो-
तज कोलाहल की अवनी रे।
जहाँ साँझ-सी जीवन-छाया
ढीली अपनी कोमल काया,
नील नयन से ढुलकाती हो-
ताराओं की पाँति घनी रे।
जिस गम्भीर मधुर छाया में,
विश्व चित्र-पट चल माया में,
विभुता विभु-सी पड़े दिखाई-
दुख-सुख बाली सत्य बनी रे।
श्रम-विश्राम क्षितिज-वेला से
जहाँ सृजन करते मेला से,
अमर जागरण उषा नयन से

बिखराती हो ज्योति घनी रे!



3.5 कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने एक कल्पित लोक की कल्पना की है, जहाँ किसी भी मनुष्य का हस्तक्षेप न हो, केवल प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध हो। लेखक ने मेरे नाविक कहकर जीवन को धीरे-धीरे चलने की बात कही है, जहाँ से मेरा बुलावा आया है, वहाँ मुझे पहुंचना है। जाने की खुशी में कवि के मन में सागर जैसी गहरी लहर दौड़ रही है। जब हम अपनी मंजिल की ओर बढ़ते हैं, तो मन में एक अजीब सा शोर और खुशी होती है। यह इसलिए कि मंजिल को पाना है और शोर इसलिए होता है कि हजार विपत्तियाँ आएगी उससे घबराना नहीं है।

कवि कहते हैं, हे ईश्वर मेरे जीवन की नैया को धीरे-धीरे इस सागर की लहरों से दूर ले चल, मुझे एक ऐसी जगह ले चल जहाँ सत्य प्रेम का आवास हो, दूर-दूर तक कोई आवाज न हो, कानों में केवल एक मधुर आवाज गूंजती रहे। जहाँ जीवन छाया के समान होकर कोमलता का भाव ले ले और नेत्र आसमान के नीले रंग के समान शांत हो जाए। आगे कवि कहते हैं, हे ईश्वर मुझे एक ऐसी दुनिया में ले चले जहाँ माधुर्य का वातावरण हो। जहाँ सुख-दुख का सत्य रूप हो। श्रम में भी आनंद की प्राप्ति हो और जागरुकता की ज्योति दिखाती हो। कवि संसार की संसरिकता से ऊब चुके हैं। उन्हें संसार में कहीं भी कोई तालमेल नहीं दिखाई दे रहे हैं। असल में कवि अपने जीवन रूपी ज्योति ईश्वर के हाथ में देकर इस सांसरिकता से मुक्ति पाने की बातें कर रहे हैं।

कविता का उद्देश्य केवल इतना ही है कि जब कोई व्यक्ति अपने मंजिल की ओर बढ़ता है तो उसके कदम भी लड़खड़ाते हैं और रास्ते में कांटे भी हजारों मिलते हैं लेकिन घबराएँ बिना आपको तारों की तरह चमकना है।

3.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : सुमित्रानन्दन पंत।

प्रश्न 2 का उत्तर : के लिए जयशंकर प्रसाद का सामन्य परिचय के कथ्य को ध्यान से पढ़िए।

प्रश्न 3 का उत्तर : 'कानन कुसुम'।



3.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. जयशंकर प्रसाद- पहला खंड कविता, ग्रंथावली, डाइमंद बुक्स पब्लिकेशन, 2017.



3.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. प्रसाद के काव्य संग्रह 'चित्राधार' को मूलत: कितने भागों में विभाजित किया गया है?
2. 'अजात शत्रु' किसने लिखा था?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. हिंदी साहित्य में प्रसाद की देन पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।
2. छायावाद को समझाते हुए प्रसाद की छायावादी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3. उल्लेखित कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए -

   ले चल वहाँ भुलावा देकर
   मेरे नाविक! धीरे-धीरे!

*** ***** ***

इकाई 4 : तोड़ती पत्थर (निराला)

इकाई की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 निराला का सामान्य परिचय

4.4 तोड़ती पत्थर (मूल पाठ)

4.5 कविता का सारांश

4.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

4.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

4.8 अभ्यास प्रश्न

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप–

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- तोड़ती पत्थर कविता को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

निराला हिंदी साहित्य जगत के महान कवि, लेखक, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार तथा संपादक थे। वे प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, काव्य के जनक और अपने नाम के अनुरूप हर क्षेत्र में निराले थे। उनके अंदर एक सबसे अहम गुण 'यथा नाम तथा गुण' के बारे में प्रमाण मिलते थे। उनकी तोड़ती पत्थर कविता मजदूर वर्ग की दयनीय दशा को उजागर करती है। कविता को पढ़ने से पहले आईए जानते हैं महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी का जीवन और साहित्य के बारे में।

4.3 निराला का सामान्य परिचय

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, सन् 1899 में बंगाल की महिषादल रियासत के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। जन्म-कुण्डली बनाने वाले पंडित के कहने से उनका नाम सूर्यकुमार रखा गया। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे।

निराला की शिक्षा वहीँ हाई स्कूल तक हुई। बाद में हिन्दी संस्कृत और बंग्ला का उन्होंने स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया। पिता की छोटी-सी नौकरी की असुविधाओं और मान-अपमान का परिचय निराला को आरम्भ में ही प्राप्त हुआ। उन्होंने दलित-शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोध मन से ही अर्जित किया। तीन वर्ष की अवस्था में माता का और बीस वर्ष का होते-होते पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों के अलावा संयुक्त परिवार का भी बोझ निराला को उठाने पड़े थे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जो महामारी फैली उसमें न सिर्फ पत्नी मनोहरा देवी का, बल्कि चाचा, भाई और भाभी का भी देहांत हो गया। सन् 1918 में स्पेनिश फ्लू इन्फ्लूएंजा के प्रकोप में निराला ने अपनी पत्नी और बेटी सहित अपने परिवार के आधे लोगों को खो दिया। शेष कुनबे का बोझ उठाने में महिषादल की नौकरी अपर्याप्त थी। इसके बाद उनका सारा जीवन आर्थिक-संघर्ष में ही बीतता गया।

लेखन कार्य -

- निराला जी ने लगभग सन् 1920 ई. के आसपास से लेखन कार्य प्रारंभ किया। उनकी पहली रचना 'जन्मभूमि' पर लिखा गया एक गीत था। निराला ने कविता के अलावा कथासाहित्य तथा गद्य की अन्यविधाओं में अपनी कलात्मक निपुणता का अच्छा परिचय दिया है। उनकी रचनाएँ निम्न प्रकार के हैं-

काव्य संग्रह - अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका (द्वितीय खण्ड, सरोज स्मृति और राम की शक्तिपूजा जैसी प्रसिद्ध कविताओं के संकलन हैं), तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, अपर (संचयन)।

उपन्यास - अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे (अपूर्ण), चमेली (अपूर्ण), इन्दुलेखा, तकनीकी।

कहानी संग्रह - लिली, सखी, सुकुल की बीवी, चतुरी चमार

निबन्ध आलोचना - रवीन्द्र कविता कानन, प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन।

बाल साहित्य - भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, भीष्म, महाराणा प्रताप, सीख भरी कहानियाँ।

अनुवाद - रामचरितमानस (विनय-भाग)-1948 (खड़ीबोली हिन्दी में पद्यानुवाद), आनंद मठ (बंग्ला से गद्यानुवाद), विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, चन्द्रशेखर, भारत में विवेकानंद आदि।

4.4 तोड़ती पत्थर (मूल पाठ)

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्राय: हुई दुपहर :
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह कांपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
मैं तोड़ती पत्थर।



4.5 कविता का सारांश

'तोड़ती पत्थर' कविता सुप्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की है। मजदूर वर्ग की दयनीय दशा को उभारने वाली यह एक मार्मिक कविता है। इस कविता में कवि ने छायावादी आवरण से बाहर निकल कर सर्वहारा वर्ग का मार्मिक चित्रण किया है। निराला जी ने इस कविता में इलाहबाद के पथ पर ग्रीष्मकालीन दोपहर में कार्यरत, पसीने से तर-बतर एक मजदूरनी का

कारुणिक शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि उसने इलाहाबाद के मार्ग पर एक मजदूरनी को पत्थर तोड़ते हुए देखा। वह जिस पेड़ के नीचे बैठकर पत्थर तोड़ रहा था वह छायादार नहीं था, फिर भी विवशतावश वहीं बैठ पत्थर तोड़ता रहा। उसका शारीर श्यामवर्ण का था तथा वह पूर्णत: युवा थी। उसके हाथ में रही भारी हथौड़े से बार-बार पत्थर पर प्रहार कर रही थी। असल में यह कविता जहाँ एक ओर महलों में ऐशोआराम का जीवन जी रहे धनाढ्य वर्ग की ओर संकेत, वहीँ दूसरी ओर झुलसती धुप में पत्थर तोड़ती युवती की दयनीय दशा का मार्मिक चित्र अंकित किया है। उसके सामने ही सघन पंक्ति वृक्षों की, अट्टालिकाएँ, भवन तथा परकोटे वाली कोठियाँ विद्यमान थी।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. 'तोड़ती पत्थर' कविता का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न संख्या 2. कवि ने मजदूरनी को कहाँ देखा था?

प्रश्न संख्या 3. 'सर्वहारा वर्ग' से तात्पर्य क्या है?

कवि कहता है कि जैसे-जैसे धुप चढ़ता रहा, गर्मी बढ़ती जा रही थी। समूचे शारीर को झुलसा देने वाली लू चल रही थी। ऐसे में जब उसने मुझे उसकी ओर देखते हुए देखा फिर उस बनते हुए भवन की ओर, यह लक्षित करके कि मैं अकेला ही था उसने तार होकर फटें कपड़ों की ओर देखा। ऐसा लगा जैसे अपनी उस स्थिति द्वारा ही उसने अपनी अवस्था की पूरी करुण गाथा सुना दी, मानों उसने सहज भाव से उँगलियाँ चलाकर सितार को झंकित कर दिया है। एक क्षण तक कवि की ओर देखने के पश्चात वह श्रमिक युवती काँप उठी। उसके मस्तक से पसीने के कण छलक रहा था तत्पश्चात वह फिर अपने प्रिय कर्म पत्थर तोड़ने में रत मानों वह स्वयं तोड़ती पत्थर है।

वस्तुत: इस कविता का मुख्य उद्देश्य नारी के उस रूप को उजागर करना है जो उस समय तक साहित्य का विषय कभी न बन पाया। केवल नारी की सुंदरता का वर्णन या उसके मातृ-सुलभ रूप, पतिव्रता आदि का वर्णन ही साहित्य में मिलता था। परन्तु निराला जी ने प्रस्तुत कविता में नारी के जिस रूप का वर्णन किया है, वह साहित्य के क्षेत्र में नवीन प्रयोग है। संभवत: इस प्रकार की कविताओं के माध्यम से सड़कों और खेतों में काम कर रही नारी के दुखदगाथा को अपने साहित्य में स्थान देकर लोगों के मन में शोषितों के प्रति सहानुभूति जगाना ही निराला जी का मुख्य उद्देश्य था।



4.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : जानने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर : इलाहबाद के पथ पर।

प्रश्न 3 का उत्तर : 'सर्वहारा' से मतलब श्रमिक, कृषक, मजदूर वर्ग से हैं। जिनके पास उत्पादन के साधनों पर कोई स्वामित्व नहीं होता, जीवन निर्वाह का एकमात्र साधन मजदूरी या वेतन के लिए अपनी श्रम शक्ति को बेचना है।



4.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. अनामिका- निराला, राजकमल प्रकाशन, 2004.



4.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. प्रस्तुत कविता मूलत: किस वर्ग को प्रतिनिधित्व करता है ?
2. हिंदी का पहला शोकगीत किसने लिखा ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. निराला का परिचय दीजिए।
2. निराला का वैचारिक आधार क्या है ?
3. उल्लेखित कविता 'तोड़ती पत्थर' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए-

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

*** ***** ***

इकाई 5 : ताज (सुमित्रानंदन पंत)

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 पन्त का सामान्य परिचय

5.4 ताज (मूल पाठ)

5.5 कविता का सारांश

5.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

5.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

5.8 अभ्यास प्रश्न

5.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- सुमितानंदन 'पन्त' के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- 'ताज' कविता को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो पाएंगे।

5.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख चार आधार स्तंभों में से सुमित्रानंदन 'पन्त' भी हैं। पंत जी की 'ताज' हिंदी की बहुचर्चित कविताओं में से है। जिसमें कवि अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं। आइए, प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पन्त के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

5.3 पन्त का सामान्य-परिचय

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म बागेश्वर जिले के कौसानी नामक ग्राम में 20 मई सन् 1900 ई. को हुआ था। जन्म के छह घंटे बाद ही पंत की माँ इस संसार को छोड़ चुकी थी। अत: उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। पंत का नाम गोंसाई दत्त रखा गया। वह एक प्रकृति प्रेमी था। वह गंगादत्त पंत की आठवीं संतान थी। सन् 1910 में शिक्षा प्राप्त करने के लिए गवर्नमेंट हाईस्कूल अल्मोड़ा गये। यहीं उन्होंने अपना नाम गोसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। सन् 1918 में मँझले भाई के साथ काशी गये और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर म्योर कॉलेज में पढ़ने के लिए इलाहाबाद चले गए। सन्

1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के भारतीयों से अंग्रेजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, न्यायालयों एवं अन्य सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने के आह्वान पर उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषा-साहित्य का अध्ययन करने लगे। इलाहाबाद में ही उनकी काव्यचेतना का विकास हुआ। कुछ वर्षों के बाद उन्हें घोर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। कर्ज से जूझते हुए पिता का निधन हो गया। कर्ज चुकाने के लिए जमीन और घर भी बेचना पड़ा। इन्हीं परिस्थितियों में वह मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुऐ। सन् 1931 में कुँवर सुरेश सिंह के साथ कालाकांकर, प्रतापगढ़ चले गये और अनेक वर्षों तक वहीं रहे। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में उन्हें आत्मा के प्रकाश का अनुभव हुआ। उन्होंने सन् 1938 में प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रूपाभ' का सम्पादन किया। श्री अरविन्द आश्रम की यात्रा से आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ। सन् 1950 से सन् 1957 तक आकाशवाणी में परामर्शदाता रहे। सन् 1958 में 'युगवाणी' से 'वाणी' काव्य संग्रहों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' प्रकाशित हुआ, जिसके कारण उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1960 में पन्त को 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य संग्रह के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। सुमित्रानंदन पन्त को सन् 1961 में 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किये गये। उनकी मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को हुई, जो हिंदी साहित्य के लिए एक बहुत बड़ी क्षति हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. निम्नलिखित बातों में से सही नहीं है-

1) 'कला और बूढ़ा चाँद' के लिए पंत को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

2) पंत ने प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रूपाभ' का सम्पादन किया।

3) अरविन्द आश्रम-यात्रा से पंत की आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ।

4) सन् उस 1950 से 1957 तक पंत दूरदर्शन में परामर्शदाता रहे।

प्रश्न संख्या 2. पंत को उनके किस काव्य-संग्रह पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिले थे ?

रचनाएँ :

सात वर्ष की उम्र में, जब वे चौथी कक्षा में ही पढ़ रहे थे, पन्त ने कविता लिखना शुरू कर दिया था। सन् 1918 के आसपास तक उन्हें हिंदी की नवीनधारा के प्रवर्तक कवि के रूप में पहचाने जाने लगे थे। इस दौर की उनकी कविताएं 'वाणी' में संकलित हैं। सन् 1926 में उनका प्रसिद्ध काव्य संकलन 'पल्लव' प्रकाशित हुआ। कुछ समय पश्चात वे अपने भाई देवीदत्त के साथ अल्मोडा आ गये। इसी दौरान वे मार्क्स व फ्रायड की विचारधारा के प्रभाव में आये। शमशेर, रघुपति सहाय आदि के साथ वे प्रगतिशील लेखक संघ से भी जुड़े रहे। वे सन् 1950 से

सन् 1957 तक आकाशवाणी से जुड़े रहे और मुख्य-निर्माता के पद पर कार्य किया। योगी अरविन्द से प्रभावित उनकी विचारधारा जो बाद की रचना 'स्वर्णकिरण' और 'स्वर्णधूलि' में देखी जा सकती हैं। 'वाणी' तथा 'पल्लव' में संकलित उनके छोटे गीत विराट व्यापक सौंदर्य तथा पवित्रता से साक्षात्कार कराते हैं। 'युगांत' तक आते-आते वे प्रगतिशील विचारधारा से जुडे प्रतीत होते हैं। 'युगांत' से 'ग्राम्या' तक उनकी काव्ययात्रा प्रगतिवाद के निश्चित व प्रखर स्वरों की उद्घोषणा करती है। उनकी साहित्यिक यात्रा के तीन प्रमुख पड़ाव हैं- प्रथम में वे छायावादी हैं, दूसरे में समाजवादी आदर्शों से प्रेरित प्रगतिवादी तथा तीसरे में अरविन्द दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवादी। सन् 1907 से 1918 के काल को स्वयं उन्होंने अपने कवि-जीवन का प्रथम चरण माना है। सन् 1922 में उच्छावास और सन् 1926 में पल्लव का प्रकाशन हुआ। सुमित्रानंदन पंत की कुछ अन्य काव्य कृतियाँ हैं-ग्रन्थि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बुढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम आदि।



महत्वपूर्ण बिंदु

उनके जीवनकाल में उनकी कुल 28 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें कविताएँ, पद्य-नाटक और निबंध आदि शामिल हैं। पंत अपने विस्तृत वाङ्मय में एक विचारक, दार्शनिक और मानवतावादी के रूप में सामने आते हैं किंतु उनकी सबसे कलात्मक कविताएं 'पल्लव' में संगृहीत हैं, जो सन् 1918 से 1925 तक लिखी गई 32 कविताओं का संग्रह है। इसी संग्रह में उनकी प्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' भी सम्मिलित है। 'तारापथ' उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। उन्होंने ज्योत्स्ना नामक एक रूपक की भी रचना की है। मधुज्वाल नाम से उमर खय्याम की रुबाइयों के हिंदी अनुवाद का संग्रह निकाला और डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' के साथ संयुक्त रूप से 'खादी के फूल' नामक कविता संग्रह प्रकाशित करवाया। 'चिदम्बरा' पर इन्हें (1968) ज्ञानपीठ पुरस्कार, 'कला और बूढ़ा चांद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (1960) से सम्मानित किया गया।

5.4 ताज (मूल पाठ)

हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन?
जब विपण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन!
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वास-विहीन रहें जीवित जन?

मानव! ऐसी भी विरक्ति क्या जीवन के प्रति?
आत्मा का अपमान, प्रेत औ' छाया से रति!!

प्रेम-अर्चना यही, करें हम मरण को वरण ?
स्थापित कर कंकाल, भरे जीवन का प्रांगण ?
शव को दें हम रूप, रंग, आदर मानव का
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दें शव का ?

गत-युग के बहु धर्म-रूढ़ि के ताज मनोहर
मानव के मोहांध हृदय में किए हुए घर !
भूल गये हम जीवन का संदेश अनश्वर,
मृतकों के हैं मृतक, जीवतों का है ईश्वर !



5.5 कविता का सारांश

छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत जी की मानवतावादी भावना से संबंधित 'ताज' एक उत्कृष्ट बहुचर्चित कविता है। इस कविता के जरिए कवि ने उन लोगों पर व्यंग किया है जो मृतकों को अमर बनाने हेतु उनकी आस्था एवं पूजा करते हैं। कवि ताजमहल को एक सुंदर महल के रूप में नहीं बल्कि रूढ़िवादी स्मारक के रूप में देखते हैं। जिसे शोषित वर्गों के शोषण से बनाया गया है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 3. सामान्यत: 'ताज' से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न संख्या 4. प्रस्तुत कविता में निहित मानवतावाद पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।

प्रस्तुत कविता में पंत जी का कहना है कि वे ताजमहल को एक ऐसे भवन या एक ऐसे स्मारक के रूप में देखते हैं जो अमर, अपार्थिव और अलौकिक सौंदर्य के कारण विश्व-विख्यात हैं। परंतु दुख की बात यह है कि यह मुर्दों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करता है, महत्व देता है, जो कि उचित नहीं है। कवि के अनुसार जब संसार के जीवित लोगों का जीवन दुख और गरीबी से भरा पड़ा है, ऐसे में मुर्दों के प्रति ताजमहल जैसा स्मारक बनाकर उसकी पूजा करना क्या सही है। उन मुर्दों को जीवित लोगों की तरह सुंदरता पूर्वक सजाना, श्रृंगार करना, जबकि, लोग भूख से जीते जी मर रहे हैं। जीवित लोग नंगे हैं, भूख और प्यास से व्याकुल हो रहे हैं, उनके पास रहने को घर नहीं हैं। कवि कहते हैं कि जब जिंदा लोगों के पास जिंदा रहने के लिए सुविधाएँ नहीं हैं, ऐसे में मुर्दों के लिए ताजमहल जैसा भवन बनाना कहां तक उचित है ! कवि के अनुसार यह तो

जीवितों पर शोषण, अपमान है। कवि ने उन लोगों पर भी व्यंग कसता है जो आज भी ताजमहल जैसे रूढ़िवादी स्मारक को अपने दिल में समाए उनकी पूजा करते आए हैं। उसे ऊँचा स्थान दे रखा है। असल में वे भ्रम के साए में जी रहे हैं। उनका हृदय यह तय नहीं कर पा रहा है कि किसे अपने मन में स्थान दे और किसे नहीं। अत: कवि कहते हैं कि ताज एक पूर्व घटना का प्रतीक मात्र है, जो बीते दिनों की स्मृति के द्योतक है। लेकिन हमें आज उचित विकल्प अपनाकर सही रास्ते पर आने हैं। जो मर गए हैं उनकी जिम्मेदारी मृतकों को लेने दे और जो जीवित हैं, ईश्वर को साक्षी मानकर कर्म करते जाए। जीवित लोगों की सेवा करना ही जीवन का सार एवं आवश्यक तत्व है। अर्थात लोगों को जो भी करना है, उन्हें जीवितों के लिए जीवित काल में ही करना चाहिए, मरने के बाद उनकी स्मृति को कलाकृति के माध्यम से सजाना,पुजा करना बेकार तथा निरर्थक है।

5.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 2 का उत्तर : चिदम्बरा।

प्रश्न 3 का उत्तर : सामान्यत: 'ताज' से तापर्य राजमुकुट अथवा शाही टोपी से है।

प्रश्न 4 का उत्तर : मानवतावाद जीवन का एक प्रगतिशील दर्शन है। जो मूलत: मानव मूल्य और चिंताओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला दर्शन या अभ्यास का एक दृष्टिकोण है। इकाई को ध्यान से पढ़कर, समझने का प्रयास करें तथा एक संक्षेप लेख प्रस्तुत करने की कोशिश करें।

5.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. आधुनिक हिंदी काव्य- डॉ. सत्यनारायण सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. डॉ. रामउदित शर्मा, सुमित्रानंदन पंत के काव्य में युगबोध और मानवतावाद।

5.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में हम किसे जानते है?

2. 'पल्लब' किसकी रचना है ?
3. पंतजी का पूरा नाम क्या है ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

   हाय ! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन ?
   जब विपण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन !
   संग-सौध में हो श्रृंगार मरण का शोभन,
   नग्न, क्षुधातुर, वास-विहीन रहें जीवित जन ?
3. प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि पंत क्या कहना चाहते हैं ?
4. छायावादी कवि के रूप में 'पन्त' की भावभूमि पर विस्तारित रूप से आलोचना कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 6 : क्या पूजा क्या अर्चन रे! (महादेवी वर्मा)

इकाई की रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 महादेवी का परिचय

- 6.3.1 जीवन एवं परिवार
- 6.3.2 शिक्षा
- 6.3.3 कार्यक्षेत्र
- 6.3.4 रचनाएँ
- 6.3.5 पुरस्कार व सम्मान

6.4 क्या पूजा क्या अर्चन रे! (मूल पाठ)

6.5 कविता का सारांश

6.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

6.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

6.8 अभ्यास प्रश्न

6.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- महादेवी वर्मा के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- महादेवी की कविता 'क्या पूजा क्या अर्चन रे!' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

6.2 प्रस्तावना

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की छायावादीयुगीन कवयित्री है। उनकी कविता कोमलता, वेदना, पीड़ा, विरह, रहस्य, गेयता आदि गुणों से युक्त हैं। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की, पंत ने उसे सुकुमार कला प्रदान की, वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त हुआ है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता रही है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजना हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य देन है।

यद्यपि महादेवी जी ने कोई उपन्यास या नाटक नहीं लिखा फिर भी उनके निबंध,

रेखाचित्र, संस्मरण आदि श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनमें जीवन के सम्पूर्ण वैविध्य समाया हुआ है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी जी की रचनाओं को पढ़कर ही जाना जा सकता है।

समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता, समाज-जीवन की गहरी परतों को छूने वाली तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा, निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्रण और उनके विकास को महादेवी ने पहली बार हिंदी साहित्य को उपहार दिया। आइये, अब उनके जीवन और रचना संसार के संबंध में जानने की कोशिश करते हैं।

6.3 महादेवी का परिचय

लेखिका महादेवी वर्मा के जीवन से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं को कई शीर्षकों में बाँट कर देखेंगे-

6.3.1 जीवन एवं परिवार

महादेवी का जन्म 26 मार्च सन् 1907 को फ़र्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके पिता का नाम है श्री गोविंद प्रसाद वर्मा, जो भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी करते थे। उनकी माता हेमरानी देवी थी, जो बहुत ही धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थी। विवाह के समय महादेवी अपने साथ सिंहासनासीन भगवान की मूर्ति भी लायी थीं तथा वे प्रतिदिन कई घंटे तक पूजा-पाठ तथा रामायण, गीता एवं विनय पत्रिका का पारायण किया करती थी। महादेवी को संगीत में विशेष रूचि थी। सन् 1916 में महादेवी का विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा के साथ हुआ, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। सन् 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगे।

6.3.2 शिक्षा

महादेवी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिनों शिक्षा स्थगित रहीं। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने सन् 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के हॉस्टल में रहने लगीं। सन् 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात

वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और सन् 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। जब महादेवी वर्मा सन् 1932 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास कर चुकी थी तब तक उनके दो कविता संग्रह 'निहार' और 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे।

6.3.3 कार्यक्षेत्र

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। उस विद्यापीठ के वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहें। सन् 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में 'साहित्यकार संसद' की स्थापना की और इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखीं। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल सन् 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। सन् 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बंगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा। जितने दिनों वे यहाँ रहे इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। 'शृंखला की कड़ियाँ' में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं, जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निन्दा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है।

6.3.4 रचनाएँ

महादेवी की रचनाओं को निम्न रूप से देख सकते हैं -

कविता संग्रह - नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (अनुदित- 1959), प्रथम आयाम (1990), अग्निरेखा (1990)।

महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जो निम्न प्रकार के हैं- आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी, यामा, आदि।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य

- **रेखाचित्र** – अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ,
- **संस्मरण** – पथ के साथी, मेरा परिवार और संस्मरण
- **निबंध** – शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)
- **संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह** – हिमालय (1963),



महत्वपूर्ण बिंदु

महादेवी की कविताओं में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता है। उनके गीतों में वेदना, प्रणयानुभूति, करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं।

6.3.5 पुरस्कार व सम्मान

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत विभिन्न संस्थाओँ से पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। सन् 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सन् 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत हुए। सन् 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि प्रदान की। सन् 1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पथम महिला थीं। सन् 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार ने 'पद्म विभूषण' उपाधि से अलंकृत किया।

महादेवी वर्मा को सन् 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, सन् 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, सन् 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा सन् 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया।

इससे पूर्व महादेवी वर्मा जी को 'नीरजा' के लिये सन् 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', सन् 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हुए हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. महादेवी वर्मा को अपनी किस रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ और कब ?

प्रश्न संख्या 2. निम्नलिखित में से महादेवी की रचना नहीं हैं –

1) अतीत के चलचित्र

2) स्मृति की रेखाएँ

3) पथ के साथी

4) माटी की मुरते

6.4 क्या पूजा क्या अर्चन रे! (मूल पाठ)

क्या पूजन क्या अर्चन रे!
उस असीम का सुंदर मंदिर मेरा लघुतम जीवन रे!
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनंदन रे!
पद रज को धोने उमड़े आते लोचन में जल कण रे!
अक्षत पुलकित रोम मधुर मेरी पीड़ा का चंदन रे!
स्नेह भरा जलता है झिलमिल मेरा यह दीपक मन रे!
मेरे दृग के तारक में नव उत्पल का उन्मीलन रे!
धूप-बने उड़ते जाते हैं प्रतिपल मेरे स्पंदन रे!
प्रिय प्रिय जपते अधर ताल देता पलकों का नर्तन रे!'

शब्दार्थ : उमड़े-आवेग से जाना, नर्तन-नाचना।



6.5 कविता का सारांश

महादेवी वर्मा जीछायावाद के आधार स्तम्भ हैं। प्रस्तुत कविता में वर्माजी ने उस असीम के प्रति जिज्ञासा के भाव के साथ-साथ उसके प्रति एक निजी भक्ति-भाव का भी पुष्ट किया है। आधुनिक मीरा कहे जाने वाली छायावादी कवयित्री महादेवी ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करता हुई कहती है- कि पूजा और अर्चना क्या है! अथवा कैसे करूँ ! मेरा तो तन-मन धन सब तुम्हारे ही प्रति समर्पित है। कविता के माध्यम से कवयित्री कहती हैं कि उस असीम को स्थूल, बाहरी पूजा, वंदना और अर्चना की आवश्यकता नहीं है। कवियत्री का छोटा-सा जीवन ही उपासना-स्थल है। उनके अनुसार 'मेरे इस सीमित जीवन में ही उस असीम तत्व का मनोरम मंदिर वास करता है। मेरी एक-एक सांस उस प्रियतम की प्रतीक्षा करती रहती है। यह प्रतीक्षा उनके स्वागत के लिए नित्य तत्पर है। उस प्रियतम के सुंदर, मोहक और कोमल पाँव को धोने के लिए मेरी आँखों से आँसू का जल प्रवाहित होता है। मेरा रोम-रोम उस असीम सत्ता की पूजार्थ अक्षत है और मेरी पीड़ा का एक-एक कतरा चंदन।' इसके अलावा कवयित्री ने अपने अंग-अंग को उपासना की सामग्री के साथ तुलना की है। इसमें 'जीवन रूपी मंदिर' 'सांसे रूपी

अभिनंदन', 'आंसू रूपी अर्घ्य', 'रोम रूपी अक्षत' तथा 'पीड़ा रूपी चंदन' पूजा के लिए काफी हैं।

कवियत्री ने इस कविता में ईश्वर को अपना प्रियतम माना है। उस अज्ञात शक्ति के प्रति महादेवी का भक्तिभाव अपरिसीम है। प्रिय का पूजन-अर्चन के लिए बाहरी व्यंजनों की आवश्यकता नहीं है। अपनी साँसों से ही वह प्रियतम का नाम जप करती है। आँखों के आँसूओं से उस अज्ञात के पैरों के धूल धोना चाहती है। उसकी पीड़ा चंदन के समान शीतल है। अपनी पीड़ा से ही प्रिय का तिलक करना चाहती है। इसके अलावा कवयित्री ने मन को दीपक की उपमा दी है। उस अज्ञात के प्यार में दीपक की तरह मन हमेशा जलता रहता है। महादेवी जी के नक्षत्र सी आँखे प्रिय के प्रेम में कमल जैसी खिली हुई हैं। धूप के समान महादेवी के स्पंदन प्रतिपल उड़ते रहते हैं। अधरों पर अपने प्रिय का ही नाम रहता है। अधरों से प्रिय का नाम जपते वक्त पलकों का नर्तन उसे ताल देता है। उसके हृदय का स्पंदन अर्थात हृदय की धड़कन धूप के धुआं समान उड़ती रहती है। महादेवी वर्मा इन रुपकों के द्वारा परमात्मा की महत्ता को व्यक्त करती है जिसे बस प्रेम से पाया जा सकता है। उसे पाने के लिए बाह्य उपचारों की आवश्यकता नहीं होती हैं। तन-मन-धन से उसके प्रति समर्पित होना ही सही अर्थों में पूजा-अर्चन है।

असल में यहाँ महादेवीजी ने अपने प्रियतम की आराधना बड़े ही अनोखे ढंग से की है। यहाँ पर कवयित्री वर्मा ने अध्यात्मवाद का समर्थन करते हुए, धार्मिक रूढ़ियों के अवैज्ञानिक, उपयोगीहीन, अनर्थक ख्यालों को तथा अंधश्रद्धा को एक प्रकार से व्यंग किया है। यहाँ उन लोगों को भी भली भांति यह संदेश मिल जाता है, जो अपनी सांप्रदायिक ताकत की आढ़ में आस्तिक होने का दावा करते हैं। कविता में दिए 'प्रतीक' रूढ़िगत रीति-नीति का बंधन तोड़ते हुए जैसे विद्रोह किया हो ऐसा जान पड़ता है। महादेवी ने कहा है कि 'मंदिर के विकल्प में सुंदर जीवन ही उस असीम का मंदिर बन सकता है, उस असीम का नित अभिनंदन करने के लिए जप का विरोध करते हुए कवयित्री ने जीवन के 'स्वांसें' ही अभिनंदन, तथा असीम के पद-रज को धोने के लिए पवित्र पानी की अपेक्षा अपने लोचन के जल-कण को ज्यादा उपयुक्त माना है, असीम के लिए अक्षत (बिना टूटे चावल) के बजाय मिलन की पीड़ा को ज्यादा उपयुक्त माना है। दीपक जलाने से अच्छा कवयित्री ने अपने मन को दीपक की भांति जलाये रखने की बात कही है। असीम के लिए अपने नेत्रों को ही कमल माना है। धूप की जगह स्पंदन और नर्तन की जगह पलको को रखकर सभी पुरानी मान्यताओं को ठुकरा देने वाली कवयित्री सचमुच अभिनंदनीय है। प्रस्तुत कविता ईश्वर उपासना के लिए किये गए वाह्य उपचारों की तुलना में मन की शुद्धताओं पर बल देता है।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 3. प्रस्तुत कविता में 'रूढ़िगत रीति-नीति का बंधन तोड़ते हुए जैसे विद्रोह किया हो'- तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।



6.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : 'यामा' के लिए सन् 1982 के 27 अप्रैल को।

प्रश्न 2 का उत्तर : जानने के लिए महादेवी के साहित्यिक परिचय को ध्यान से पढ़ें।

प्रश्न 3 का उत्तर : प्रस्तुत कविता में महादेवी ने अपने प्रियतम की आराधना बड़े ही अनोखे ढंग से की है। यहाँ पर कवयित्री ने आध्यात्मवाद का समर्थन करते हुए, धार्मिक रूढ़ियों के अवैज्ञानिक, उपयोगीहीन, अनर्थक ख्यालों को तथा अंधश्रद्धा को एक प्रकार से व्यंग किया है।

विस्तृत जानकारी के लिए सारांश का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।



6.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. नीरजा–महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, 2008।



6.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. महादेवी जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. महादेवी वर्मा की प्रथम कृति कौन सी थी ?
3. 'शृंखला की कड़ियाँ' कब निकला था ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. महादेवी वर्मा का जीवन तथा साहित्य पर संक्षेप में लिखिए ?
2. प्रस्तुत कविता का भावार्थ प्रस्तुत कीजिए ?
3. महादेवी वर्मा किस काल के कवयित्री थे ? छायावाद में उनकी भूमिका पर विस्तारित रूप से चर्चा कीजिए।
4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

   क्या पूजन क्या अर्चन रे !

   उस असीम का सुंदर मंदिर मेरा लघुतम जीवन रे !

*** ***** ***

इकाई 7 : बादल को घिरते देखा है (नागार्जुन)

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 नागार्जुन का सामान्य परिचय

7.4 बादल को घिरते देखा है (मूल पाठ)

7.5 कविता का सारांश

7.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

7.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

7.8 अभ्यास प्रश्न

7.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- नागार्जुन के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'बादल को घिरते देखा है' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो पाएंगे।

7.2 प्रस्तावना

विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत एवं बांग्ला में मौलिक रचनाएँ कीं तथा संस्कृत, मैथिली एवं बंग्ला से अनुवाद का कार्य भी किया है। नागार्जुन का मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नागार्जुन जी ने मैथिली में 'यात्री' उपनाम से साहित्य की रचना की। यह उपनाम उनके मूल नाम के साथ मिलकर एक हो गया। उनकी कविता 'बादल को घिरते देखा है' को पढ़ने से पहले नागार्जुन के जीवन और साहित्य के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करने की कौशिश करते हैं।

7.3 नागार्जुन का सामान्य परिचय

नागार्जुन का जन्म सन् 1911 ई. की ज्येष्ठ पूर्णिमा को वर्तमान के मधुबनी जिले के सतलखा नामक स्थान में हुआ। यह उन का ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता उमा देवी थी। गोकुल मिश्र और उमा देवी की लगातार चार संताने हुईं और असमय ही वे सब चल बसें। अशिक्षित ब्राह्मण गोकुल

मिश्र ईश्वर के प्रति आस्थावान तो स्वाभाविक रूप से थे ही पर उन दिनों अपने आराध्य देव शंकर भगवान की पूजा ज्यादा ही करने लगे थे। वैद्यनाथ धाम (देवघर) जाकर बाबा वैद्यनाथ की उन्होंने यथाशक्ति उपासना की और वहाँ से लौटने के बाद घर में पूजा-पाठ करने लगा। फिर जो पाँचवीं संतान हुई तो मन में यह शंका पैदा हुई कि चार संतानों की तरह यह भी कुछ समय में ठगकर चल बसेगा। अत: इसे 'ठक्कन' कहा जाने लगा। काफी दिनों के बाद इस ठक्कन का नामकरण हुआ और बाबा वैद्यनाथ की कृपा-प्रसाद मानकर इस बालक का नाम वैद्यनाथ मिश्र रखा गया।'



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. 'यात्री' किस साहित्यकार का उपनाम है?

प्रश्न संख्या 2. 'ठक्कन' का नाम वैद्यनाथ मिश्र कैसे पड़ा?

नागार्जुन की प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय संस्कृत पाठशाला में हुई। उन्होंने उच्च शिक्षा वाराणसी और कलकत्ता में पूर्ण की। वे सन् 1936 में श्रीलंका यात्रा पर गए और वहीं पर बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए। सन् 1936-1938 तक वे श्रीलंका में ही रहे। इसके बाद वे स्वदेश लौटकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इन्हीं के कारण ही उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। नागार्जुन एक सफल पत्रकार एवं कुशल संपादक भी थे। सन् 1935 में उन्होंने 'दीपक' (हिंदी मासिक) और सन् 1942-43 में 'विश्वबंधु' (साप्ताहिक) पत्रिकाओं का संपादन किया। नागार्जुन को अनेक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इनके मैथिली कविता-संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्रदान किया गया। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार के 'भारत-भारती', मध्य प्रदेश सरकार की ओर से 'मैथिलीशरण गुप्त' तथा बिहार सरकार के 'राजेंद्र प्रसाद' आदि पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। दिल्ली हिंदी अकादमी ने भी उन्हें 'शिखर सम्मान' से पुरस्कृत किया। सन् 1998 में महाकवि नागार्जुन का देहावसान हो गया है।

रचनाएँ - उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य-संग्रह - युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, 'तालाब की मछलियाँ, हज़ार-हज़ार बाँहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या : ऐसे भी तुम क्या, पका है कटहल, मैं मिलिटरी का बूढ़ा घोड़ा आदि।

उपन्यास - बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुंभीपाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, वरुण के बेटे आदि।

प्रबंध काव्य - भस्मांकुर, भूमिजा

निबंध - हिमालय की बेटियाँ

संस्मरण - एक व्यक्ति - एक युग

कहानी संग्रह - आसमान में चन्दा तैरे

बाल साहित्य - कथा मंजरी भाग-1, कथा मंजरी भाग-2, मर्यादा पुरुषोत्तम राम (बाद में 'भगवान राम' के नाम से तथा अब 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के नाम से प्रकाशित)

साहित्यिक विशेषताएँ -

आधुनिक हिंदी साहित्य में नागार्जुन जी को मूलत: जन-भावनाओं के कवि माने जाते हैं। उनकी रचनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर विद्वानों के बीच बहुचर्चित हैं। उनकी कविताएँ जनमानस से सीधे जुड़ी हुई हैं तथा आम-आदमी की भावनाओं को चित्रित करनेवाली हैं। नागार्जुन की रचनाओं में प्रकृति सौंदर्यपूर्ण का वर्णन हुआ है। उन्होंने प्रकृति का उद्दीपन एवं आलंबन दोनों रूपों का चित्रण स्वाभाविकता के साथ किया है। वे प्रकृति को अनेक कोणों से निहारते हैं तथा उनके चित्रण बड़ी ही सहजता एवं विविधता के साथ करते हैं। उनकी कविता में धारदार व्यंग्य के नमूने भी देखे जाते हैं। राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण उनकी कविता का मूल स्वर है। वे राजनीतिक अपराधीकरण और सामाजिक कुरीतियों पर करारे व्यंग्य करते हैं। आम जनता के हितों के प्रति वे सदैव सचेत रहे हैं तथा इन्हीं के हितों और अधिकारों को अपने काव्य में उजागर भी करते हैं। वस्तुत: उनकी कविताओं में लोक जीवन, प्रकृति और समकालीन राजनीति तथा साधारण जनगण के विविध भावों को विषय बनाया है।

भाषा-शैली - चूँकि नागार्जुन जी जन-कवि हैं, इसलिए उनकी भाषा में आम बोलचाल की भाषा के शब्दों को स्थान मिला है। उनकी पूर्ववर्ती काव्य रचनाओं में भाषा का बहुत ही सरल एवं सहज रूप मिलता है। उन्होंने छंदबद्ध एवं छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताओं का सृजन किया। बाद की रचनाओं में उनकी भाषा अधिक गंभीर एवं संस्कृतनिष्ठ है। अत: उनकी काव्य भाषा में एक ओर आम बोलचाल की भाषा की रवानी और सादगी है तो दूसरी ओर संस्कृतनिष्ठ शब्दावली की गंभीरता भी। वस्तुत: नागार्जुन जी धरती, आम जनता और श्रम के गीत गाने वाले भावुक एवं संवेदनशील कवि हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 3. नागार्जुन के संबंध में निम्नलिखित बातें सही नहीं है

1) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें 'भारत-भारती' सम्मान दिया गया।
2) दिल्ली हिंदी अकादमी ने भी उन्हें 'शिखर सम्मान' से सम्मानित किया।
3) बिहार सरकार से उन्हें 'राजेंद्र प्रसाद' पुरस्कार प्राप्त हुआ।
4) कृष्णकांत हेन्दिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा 'डी.लिट्.' सम्मान दिया गया।

7.4 बादल को घिरते देखा है (मूल पाठ)

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,

बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त-मधुर विसतंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु वसंत का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा
बालारुण की मुदु किरणें थीं
अगल-बगल स्वर्णिम शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती,
निशा काल से चिर-अभिशापित
बेबस उस चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बरफ़ानी घाटी में
शत-सहस्न फुट ऊँचाई पर

अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल-
के पीछे धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
बूँड़ा बहुत परंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

शत-शत निझर-निझरणी-कल
मुखरित देवदारु कानन में,
शोणित धवल भोज पत्रों से
छाई हुई कुटी के भीतर,
रंग-बिरंगे और सुगंधित
फूलों से कुंतल को साजे,
इंद्रनील की माला डाले
शंख-सरीखे सुघढ़ गलों में,
कानों में कुवलय लटकाए,
शतदल लाल कमल वेणी में,
रजत-रचित मणि-खचित कलामय

पान पात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने

लोहित चंदन की त्रिपदी पर,
नरम निदाग बाल-कस्तूरी
मृगछालों पर पलथी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

शब्दार्थ - अमल - निर्मल, धवल - सफ़ेद, शिखर - चोटी, तुहिन कण - ओस की बूँद, अनिल - हवा, वायु, बालारुण - उगता सूर्य, विरहित - अलग होकर दुखी होना, चकवा-चकई - एक प्रकार के नर और मादा पक्षी, शैवाल - काई की जाति की एक घास, धावित - दौड़कर, कुबेर - धन के देवता। अलका - कुबेर की नगरी, व्योम - आकाश, नभ-चुंबी - आकाश को चूमती, कुंतल - बालों की चोटी, वेणी, इंद्रनील - नीलम, नीले रंग के कीमती पत्थर, कुवलय - नीलकमल, शतदल - कमल, रजत-रचित - चाँदी से बना हुआ, मणिरचित - मणियों से बना हुआ, पान-पात्र - मदिरा का पात्र, सुराही, द्राक्षासव - अंगूरों की शराब, लोहित - लाल, त्रिपदी तिपाई, निदाग - दागरहित, उन्मद - नशीला, मदिरारुण - शराब पीने से लाल हुई आँखें।



7.5 कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता कवि नागार्जुन के काव्य-संग्रह 'धुगधारा' से ली गई है। इस कविता में कवि ने घिरते बादलों के एकाध चित्र खींचे हैं।

कवि कहता है कि मैंने हिमालय पर्वत के स्वच्छ, निर्मल और बर्फ की सफ़ेद चादर से ढकी चोटियों पर बादल को घिरते देखा है। हिमालय की ऊँची सफ़ेद चोटियों पर बादल से वर्षा ऐसे होती है मानों ओस की बूँदे बरस रही हों, फिर ये ओस की बूँदे मानसरोवर झील में खिले सुंदर कमलों के पत्तों पर गिरती हैं। मैंने बादलों से गिरती ओस की बूँदों को स्वयं देखा है।

कवि ने देखा है कि हिमालय पर्वत की ऊँची चोटियों पर अनेक छोटी-बड़ी झीलें हैं। इन झीलों के स्वच्छ एवं निर्मल नीले समतल के जल में देशों में रहने वाले पक्षी विचरण करते हैं। जब समतल देशों में वर्षा ऋतु में गर्मी पड़ती है तो उमस पैदा हो जाती है। इसी उमस से बचने

के लिए ये पक्षियों हिमालय की झीलों की ओर चले जाते हैं, साथ ही इन पक्षियों के साथ-साथ स्थानीय हंस पक्षी भी झील में खिले कमलों की नाल में कड़वे एवं मीठे तंतुओं को खाते हैं। कवि एक बार फिर कहता है कि मैंने इन पक्षियों के साथ हंसों को भी झीलों में तैरते देखा है। बादलों को भी घिरते देखा है।

फिर कवि कहते हैं कि हिमालय की ऊँची स्वर्णिम चोटियों के बीच मानसरोवर झील है। वसंत ऋतु में उदय होते सूर्य की स्वर्णिम किरणें बर्फ की सफ़ेद चादर से ढकी चोटियों पर पड़ती हैं। मंद-मंद गति से हवा चल रही है। इस सुंदर एवं स्वच्छ वातावरण में चकवा और चकई जो सारी रात अलग-अलग रहते हैं , उन्हें एक-दूसरे से अलग रहने की सदा से अभिशाप रहा है। परंतु सुबह होते ही उन बेबस और व्याकुल चकवा-चकई की चीखें बंद हो जाती है। कवि चकवा-चकई को हिमालय स्थित मानसरोवर के किनारे शैवाल की हरी चादर पर प्यार-भरी छेड़छाड़ करते देखा है अर्थात् रात-भर विरह वेदना से उबरकर सुबह जब दोनों मिलते हैं तो वे एक-दूसरे के साथ छेड़छाड़ और प्यार भरी क्रीड़ाएँ करते हैं।

हिमालय पर्वत में स्थित सैकड़ों-हज़ारों फुट की ऊँचाई पर गहरी और दुर्गम बर्फीली घाटी में अनेक प्रकार के फूलों की सुगंध बिखरी हुई है। चारों ओर सुगंधमय वातावरण है। मृग जिसके पास स्वयं कस्तुरी की सुगंध होती है वह इस नशीली सुगंध के पीछे-पीछे दौड़ रहा है तथा ऐसा प्रतीत होता है, जैसे बेचैन होकर इसी वातावरण में अपने ही ऊपर चिढ़ रहा हो। यह सारा घटनाक्रम मैंने (कवि)अपनी आँखों से देखा है।

कवि ने कालिदास के 'मेघदूत' में पढ़ा था कि धन की देवता कुबेर की अलका नगरी हिमालय में स्थित है, परंतु बादलों के बीच में कुबेर और उसकी अलका नगरी कही खो गई है अर्थात घिरते बादलों ने कुबेर और उसकी नगरी को जैसे लुप्त कर दिया है। मेघदूत में कालिदास अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन करते हैं कि गंगाजल आकाश में चक्कर काट रहा है। परंतु कवि को बहुत दूँढ़ने पर भी न कुबेर मिला, न उसकी अलका नगरी तथा मेघदूत भी ,मानों कहीं छुप गया है। इसका पता कौन बता सकता है। शायद कालिदास के मेष भी यहीं पर बरस गए होंगे। चलो, जाने दो। यह सब तो कवि (कालिदास) की कोरी कल्पना थी। परंतु सत्य तो यह है कि मैंने (कवि) भीषण शीत ऋतु में आकाश को चूमते कैलाश पर्वत के शिखर पर गहन बादलों को आपस में टकराते हुए गरज-गरजकर बरसते देखा है।

कवि ने कहा है कि हिमालय पर्वत में देवदार के अनेक घने जंगल है। पर्वत की चोटियों से सौ-सौ छोटे-बड़े झरने देवदार के इन्हीं जंगलों में कल-कल निनाद से बहते हुए देखा है। इन जंगलों के बीच ही किन्नर जाति के लोग लाल और सफ़ेद भोज-पत्रों से कुटिया बनाकर रहते हैं। किन्नर जाति की स्त्रियाँ अपने बालों में रंग-बिरंगे एवं सुगंधित फूलों को सजाए हुए हैं। वे अपने सुंदर एवं शंखों के समान सुघड़ गलों में नीलम पत्थर की मालाएँ डाली हुई हैं। कानों में नीलकमल लटका रखे हैं। लाल कमल अपनी चोटी (वेणी) में बाँधे हुए हैं। किन्नर जाति के नर चाँदी और मणियों से बने हुए सुरा के पात्रों में अंगूरों की शराब को लाल चंदन की तिपाई पर रखे

हुए देखा है। वे कस्तूरी मृगों की मुलायम और गर्म खाल पर पालथी मारकर बैठे हैं। उनकी आँखों में शराब का नशा छाया हुआ है। कवि कहता है कि मैंने मदमस्त आँखोंवाले इन किन्नर जाति के नर-नारियों को अपने कोमल और मुलायम अंगुलियों से बाँसुरी बजाते देखा है। बादलों को घिरते देखा है।



7.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : नागार्जुन का।

प्रश्न 2 का उत्तर : पाने के लिए नागार्जुन का सामान्य परिचय के कथ्य को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर : पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।



7.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. नागार्जुन का रचना-संसार- विजय बहादुर सिंह, प्रथम संस्करण-1982, संभावना प्रकाशन, हापुड़ से; पुनर्प्रकाशन-2009, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से।
2. नागार्जुन का कवि-कर्म- खगेंद्र ठाकुर, प्रथम संस्करण-2013, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली।
3. नागार्जुन रचनावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003।
4. नागार्जुन रचनावली, खण्ड-2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003।
5. नागार्जुन रचनावली, खण्ड-3, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2003।



7.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. नागार्जुन ने हिंदी की कौन-कौन सी पत्रिकाओं का सम्पादन किया था?
2. नागार्जुन का जन्म किस स्थान पर हुआ था?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. नागार्जुन का परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. 'मैंने तो भीषण जाड़ों में
   नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
   महामेघ को झंझानिल से
   गरज-गरज भिड़ते देखा है' - तापर्य स्पष्ट कीजिए।
3. 'बादल को घिरते देखा है' कविता की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए?

*** ***** ***

इकाई 8 : आत्मपरिचय (हरिवंश राय बच्चन)

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
8.1 उद्देश्य
8.2 प्रस्तावना
8.3 हरिवंश राय 'बच्चन' का सामान्य परिचय
8.4 आत्मपरिचय (मूल पाठ)
8.5 कविता का सारांश
8.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
8.7 अधिक जानने के लिए पढ़े
8.7 अभ्यास प्रश्न

8.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- हरिवंश राय 'बच्चन' के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'आत्मपरिचय' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

8.2 प्रस्तावना

हरिवंश राय 'बच्चन' हिंदी के उत्तर छायावादी काल के एक प्रसिद्द कवि और लेखक रहे हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'मधुशाला' है। विषय और शैली की दृष्टि से सरसता और स्वाभाविकता बच्चन की कविताओं की विशेषता रही है। उनकी कविताओं में रूमानियत की कसक है। गेयता, सरलता, सरसता के कारण इनकी काव्यों को लोग काफी पसंद किया करते हैं। बच्चन जी ने सन 1935 से 1940 के बीच व्यापक निराशा के दौर में मध्यम वर्ग के विक्षुब्ध और वेदनाग्रस्त मन को वाणी दी। उनकी कविता 'आत्मपरिचय' को पढ़ने से पहले हम उनके बारे में सामान्य अध्ययन कर लेते हैं।



महत्वपूर्ण बिंदु

हरिवंश राय 'बच्चन' भारतीय फिल्म उद्योग के प्रतिष्ठित अभिनेता अमिताभ बच्चन के पिता हैं। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन किया। बाद में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय

में हिन्दी विशेषज्ञ रहे, राज्य सभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। 'बच्चन' जी की गिनती हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती हैं।

8.3 हरिवंश राय बच्चन का सामान्य परिचय

हरिवंश राय 'बच्चन' जी का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 को प्रयाग में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज मूलरूप से अमोढ़ा (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। इनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माता सरस्वती देवी थी। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' या 'संतान' होता है। बाद में ये इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फिर हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू.बी. यीट्स की कविताओं पर पीएच.डी. की। सन् 1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ था। सन् 1936 में टीबी के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद सन् 1941 में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थी। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फिर' जैसी कविताओं की रचना की।

सन् 2002 तक उनका स्वस्थ्य बिगड़ने लगा और 18 जनवरी 2003 में सांस की बीमारी के वजह से मुंबई में ही उनकी मृत्यु हुई।

रचनाएँ -

कविता संग्रह -

तेरा हार (1929), मधुशाला (1935), मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), आत्म परिचय (1937), निशा निमंत्रण (1938), एकांत संगीत (1939), आकुल अंतर (1943), सतरंगिनी (1945), हलाहल (1946), बंगाल का काल (1946), खादी के फूल (1948), सूत की माला (1948), मिलन यामिनी (1950), प्रणय पत्रिका (1955), धार के इधर-उधर (1957), आरती और अंगारे (1958), बुद्ध और नाचघर (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूंटे (1962), दो चट्टानें (1965), बहुत दिन बीते (1967), कटती प्रतिमाओं की आवाज़ (1968), उभरते प्रतिमानों के रूप (1969), जाल समेटा (1973), नई से नई-पुरानी से पुरानी (1985)।

आत्मकथा -

1. क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969),
2. नीड़ का निर्माण फिर (1970),
3. बसेरे से दूर (1977),
4. दशद्वार से सोपान तक (1985)
5. प्रवासी की डायरी

विविध

1. बच्चन के साथ क्षण भर (1934),
2. खय्याम की मधुशाला (1938),
3. सोपान (1953),
4. मैकबेथ (1957),
5. जनगीता (1958),
6. ओथेलो (1959),
7. उमर खय्याम की रुबाइयाँ (1959),
8. कवियों में सौम्य संत : पंत (1960),
9. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि: सुमित्रानंदन पंत (1960),
10. आधुनिक कवि (1961),
11. नेहरू: राजनैतिक जीवनचरित (1961),
12. नये पुराने झरोखे (1962),
13. अभिनव सोपान (1964)
14. चौंसठ रूसी कविताएँ (1964)
15. नागर गीता (1966),
16. बच्चन के लोकप्रिय गीत (1967)
17. डब्लू बी यीट्स एंड अकल्टिज़्म (1968)
18. मरकत द्वीप का स्वर (1968)
19. हैमलेट (1969)
20. भाषा अपनी भाव पराये (1970)
21. पंत के सौ पत्र (1970)
22. प्रवास की डायरी (1971)
23. किंग लियर (1972)
24. टूटी छूटी कड़ियाँ (1973)[3]

पुरस्कार/सम्मान -

उनकी कृति 'दो चट्टानें' को सन् 1968 में हिन्दी कविता के 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें' सोवियत लैंड 'नेहरू पुरस्कार' तथा 'एफ्रो एशियाई सम्मेलन' के 'कमल पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउण्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें 'सरस्वती' सम्मान दिया था।

बच्चन को भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. हरिवंश राय बच्चन किस काल के कवि थे ?

प्रश्न संख्या 2. एफ्रो एशियाई सम्मेलन द्वारा 'बच्चन' को क्या पुरस्कार मिला ?

प्रश्न संख्या 3. निम्नलिखित में से बच्चन के नहीं हैं –

1) मैकबेथ
2) ओथेलो
3) बी. ए. ल्टिज़म
4) हैमलेट

8.4 आत्मपरिचय (मूल पाठ)

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ!
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,

मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!
मैं निज उर के उश्वार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ!
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ!
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!
मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,

मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!
कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना!
मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता!
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।
मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना!
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना!
मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,

मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ!
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ!

शब्दार्थ: झंकृत-झनझनाहट, झंकार, कम्पन, स्नेह-प्रेम,प्यार, उर-मन, दिल, भाता-अच्छा लगना, स्वप्नों का संसार-काल्पनिक दुनिया, कल्पना का संसार, पग-पैर, रोदन-रोना, विलाप, राग-प्रेम, अनुराग, भूप-राजा, फूट पड़ा-जोर से रोना।



8.5 कविता का सारांश

'आत्मपरिचय' नामक प्रस्तुत कविता हरिवंश राय 'बच्चन' जी के काव्य संग्रह 'निशा निमंत्रण' में संकलित है। इस कविता में कवि ने व्यक्ति और संसार के घनिष्ठ सम्बन्ध को दर्शाया है। इस संबंध के कारण संसार से निरपेक्ष रहना संभव नहीं है। कवि कहता है कि वह संसार में जीवन का भार अर्थात सांसारिक जिम्मेदारियों के बाबजूद अपने जीवन से प्यार करता है। कवि

अपने जीवन को सितार की तरह मानते हैं, किसी प्रिय के द्वारा कवि के कोमल मन की भावनाओं को छू लेने से दिल में हलचल पैदा होती हैं, उसी प्रेम से भरे अपने जीवन को कवि जी रहा है। कवि प्रेम रूपी मदिरा को पीकर उसके नशे में मस्त रहते हैं। कवि के अनुसार यह संसार उन लोगों को अधिक महत्व देता है जो संसार के अनुसार चलते हैं तथा उनका गुणगान करते हैं। लेकिन कवि अपने मन की इच्छा के अनुसार चलता है, अर्थात वह वही करता है जो उसका मन कहता है। फिर दुनिया उनके बारे में क्या कहेंगे, इसकी उन्होंने कभी परवाह नहीं की। कवि के अनुसार यह संसार अधूरा है, जिस कारण उसको यह संसार पसंद नहीं आता। कवि को स्वार्थी व चापलूसी से भरे संसार में रहने से अधिक अपनी कल्पना के संसार में जहाँ प्रेम ही प्रेम भरा हो, रहना पसंद है। यहाँ के लोग संसार के आपदा रूपी सागर को पार करने के लिए कर्म रूपी नाव बनाते हैं, परंतु कवि संसार रूपी सागर की लहरों पर मस्त होकर बहता है। वह अपनी जवानी के पागलपन की मस्ती में घूमता रहता है। इस पागलपन के कारण कवि अनेक दुखों व निराशाओं का भी सामना करता है और इन्हें साथ लिए घूमता है। इस संसार के लोग सत्य को जानने की कोशिश करते हैं, परंतु कोई भी सत्य को नहीं जान पाया है और बिना सत्य को जाने ही इस संसार को छोड़कर चले गए हैं। कवि के अनुसार नादान अर्थात मूर्ख भी इस संसार में होते हैं तथा समझदार एवं चतुर भी। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए वैभव, समृद्ध, भोग-विलास की तरफ भाग रहा है। वे इतना सत्य भी नहीं सीख सके हैं कि सांसारिक वस्तुएँ सदैव के लिए नहीं रहती। यह सब जानते, समझते हुए भी जो इस संसार से कुछ भी सीख नहीं पाता है, इसे मूर्ख ही कहा जायेगा। कवि इस बात को जान चुका है। इसलिए जो भी सांसारिक अनुभव कवि ने सीखा है, अब उनको भूलना चाहता है। कवि अपनी मस्ती में अपने मन के अनुसार जीवन जीना चाहता है। कवि का व्यक्तित्व संसार से बिल्कुल अलग है। हर रोज अपनी कल्पना के अनुसार संसार का निर्माण करता है, फिर उसे मिटा देता है। कवि अपनी पीड़ा को प्रेम में छिपाए फिरता है, वाणी भले ही ठंडी सी प्रतीत होती हो परन्तु उसमें पूरा जोश लेकर चलता है। प्रेम की पीड़ा के कारण उसके मन का रोना, मन की पीड़ा शब्दों के रूप में प्रकट हुई हो संसार ने गीत समझा। जब कवि की वेदना अधिक तीव्रतर हुई, तो अपने दुख को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना चाहा और इस प्रक्रिया को मात्राओं का निश्चित मान के अनुसार कविता मानने लगी। कवि को यह समझ नहीं आ रहा है कि यह संसार उसे कवि के रूप में क्यों अपनाना चाह रहा है ? क्योंकि वे तो स्वयं को नया दीवाना कहता है जो इस दुनिया में मिलने वाली हर परिस्थितियों में मस्त रहता है। कवि प्रेम रूपी मस्ती का सन्देश लिए फिरता है, जिसको सुनकर सारा संसार झूम उठता है। कवि के प्रेम भरे गीतों की मस्ती सुनकर लोग प्रेम में झुक तथा प्रेम के आनंद से झूमने लगते हैं।



8.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : उत्तर छायावादी काल के।

प्रश्न 2 का उत्तर : कमल पुरस्कार।

प्रश्न 3 का उत्तर : अज्ञेय की रचनाओं को ध्यान से पढ़िए।



8.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. निशा निमंत्रण- हरिवंश राय बच्चन, राजपाल एंड संस, 2017



8.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. बच्चन का सम्पूर्ण नाम क्या है?
2. बच्चन की कृति 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की विधा क्या है?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. कवि हरिवंश राय बच्चन का परिचय दीजिए।
2. 'हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
   मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ- तापर्य स्पष्ट कीजिए।
3. 'आत्मपरिचय' कविता की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए?
4. संसार के संबंध में बच्चन का विचार कैसा हैं? कविता के आधार पर लिखिए।

*** ***** ***

इकाई 9 : पुष्प की अभिलाषा (माखनलाल चतुर्वेदी)

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 माखनलाल चतुर्वेदी का सामान्य परिचय

9.4 पुष्प की अभिलाषा (मूल पाठ)

9.5 कविता का सारांश

9.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

9.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

9.8 अभ्यास प्रश्न

9.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन और साहित्य संसार के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित हो पाएंगे।

9. 2 प्रस्तावना

माखनलाल चतुर्वेदी जी ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे रचनाकार थे। इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत का अध्ययन किया। ये राष्ट्रीय दैनिक 'कर्मवीर' के संपादक थे। इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इनका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। राष्ट्रीयता माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य का कलेवर तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है।

9. 3 माखनलाल चतुर्वेदी का सामान्य परिचय

माखन लाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, सन् 1889 ई. में मध्य प्रदेश में हुआ था। ये बचपन में काफ़ी रूग्ण और बीमारग्रस्त रहा करते थे। इनका परिवार राधावल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था, इसलिए स्वभावत: चतुर्वेदी को वैष्णव केपद कण्ठस्थ हो गये। प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति के बाद ये घर पर ही संस्कृत का अध्ययन करने लगे थे। इनका विवाह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में हुआ और उसके एक वर्ष बाद आठ रुपये मासिक वेतन पर इन्होंने अध्यापना शुरू की।

लेखन कार्य एवं रचनाएँ -

विकास क्रम की दृष्टि से माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं को दो वर्गों में रख सकते हैं।

1. आरम्भिक काव्य-सन् 1920 ई. के पहले की रचनाएँ
2. परिणति काव्य-1920 ई. से बाद की रचनाएँ

चतुर्वेदी जी की रचनाओं की प्रवृत्तियाँ प्राय: स्पष्ट और निश्चित हैं। राष्ट्रीयता उनके काव्य का कलेवर है तो भक्ति और रहस्यात्मक प्रेम उनकी रचनाओं की आत्मा। आरम्भिक रचनाओं में भी वे प्रवृत्तियाँ स्पष्टत: परिलक्षित होती हैं। प्रभा के प्रवेशांक में प्रकाशित उनकी कविता 'नीति-निवेदन' शायद उनके मन की तत्कालीन स्थिति का पूरा परिचय देती है। इसमें कवि 'श्रेष्ठता सोपानगामी उदार छात्रवृन्द' से एक आत्म-निवेदन करता है। उन्हें पूर्वजों का स्मरण दिलाकर रत्नगर्भा मातृभूमि की रंकतापर तरस खाने को कहता है। उसी समय प्रभा भाग 1, संख्या 6 में प्रकाशित 'प्रेम' शीर्षक कविता में सबसे सावित्य प्रेम व्याप्त हो, इसके लिए सन्देश दिया है क्योंकि इस प्रेम के बिना 'बेड़ा पार' होने वाला नहीं है। माखनलाल जी की राष्ट्रीय कविताओं में आदर्श की थोथी उड़ाने भर नहीं है। उन्होंने खुद राष्ट्रीय संग्राम में अपना सब कुछ बलिदान किया है, इसी कारण उनके स्वरों में 'बलिपंथी' की सच्चाई, निर्भीकता और कष्टों के झेलने की अदम्य लालसा की झंकार है। यह सच है कि उनकी रचनाओं में कहीं-कहीं 'हिन्दू राष्ट्रीयता' का स्वर ज़्यादा प्रबल हो उठा है, किंतु हम इसे साम्प्रदायिकता नहीं कह सकते, क्योंकि दूसरे सम्प्रदायों के अहित की आकांक्षा इनमें रंचमात्र भी दिखाई नहीं पड़ती।

20 वीं शती के प्रथम दशक में ही चतुर्वेदी जी ने कविता लिखना आरंभ कर दिया था, पर आज़ादी के संघर्ष में सक्रियता का आवेश शनै:-शनै: उम्र के चढ़ाव के साथ परवान चढ़ा, जब वे बाल गंगाधर तिलक क्रू क्रांतिकारी क्रिया-कलापों से प्रभावित होने के बावजूद महात्मा गाँधी के भी अनुयायी बने। आपने राष्ट्रीय चेतना को राजनैतिक वक्तव्यों से बाहर निकाला।

चतुर्वेदी जी की रचनाओं को प्रकाशन की दृष्टि से इस क्रम में रखा जा सकता है। 'कृष्णार्जुन युद्ध' (1918 ई.), 'हिमकिरीटिनी' (1941 ई.), 'साहित्य देवता' (1942 ई.), 'हिमतरंगिनी' (1949 ई.- साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत), 'माता' (1952 ई.)। गद्य संग्रहों में से- साहित्य देवता, अमीर इरादे गरीब इरादे (1960ई.),'युगचरण', 'समर्पण' आदि। माखनलाल चतुर्वेदी की मृत्यु 1968 ई. में हुई।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. माखनलाल चतुर्वेदी को हम किस नाम से जानते हैं?

प्रश्न संख्या 2. चतुर्वेदीजी को अपनी किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था?

9.4 पुष्प की अभिलाषा (मूल पाठ)

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध
प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृ-भूमि पर शीश-चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक!



9.5 कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता के माध्यम से पुष्प के देशप्रेम एवं मातृभूमि के प्रति समर्पण भावना को स्पष्ट करते हुए कवि कहता है कि पुष्प की यह चाह नहीं है कि वे सुरबाला या रूपशी के गले के हार रूप में गुथा जाए या फिर यह भी चाह नहीं है कि प्रेमी और प्रेमिका के बंधन में बंध जाए और उनके के प्यार को ललचाए। बल्कि पुष्प की अभिलाषा यह है कि मातृभूमि के प्रति प्राण उसर्गित करने वालों के पथ पर ही उसे डाला जाए। अर्थात पुष्प आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों के पैरों तले मसलना पसंद करते हैं। यही उसकी इच्छा है। कवि के अनुसार हमें पुष्प की तरह होना चाहिए जिस प्रकार पुष्प देवताओं के शीसपर अर्पित होने के बावजूद उसमें किसी प्रकार का घमंड नहीं होता है उसी प्रकार हमें भी घमंड नहीं करना चाहिए और हमेशा दूसरो की मदद करना चाहिए।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 3. पुष्प की अभिलाषा क्या है तथा इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है।



9.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : एक भारतीय आत्मा।

प्रश्न 2 का उत्तर : 'हिमतरंगिनी' के लिए।

प्रश्न 3 का उत्तर : जानने के लिए इकाई को ध्यान से अध्ययन करें।



9.7 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. प्रस्तुत कविता में किसके प्रति प्रेम की भावनाओं को दर्शाया गया है?
2. कवि के अनुसार हमें किसकी तरह होना चाहिए?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. एक भारतीय आत्मा के रूप में हम किसे जानते हैं? उनकी साहित्यिक देन पर चर्चा कीजिए।
2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   मुझे तोड़ लेना बनमाली,
   उस पथ पर देना तुम फेंक!
   मातृ-भूमि पर शीश-चढ़ाने,
   जिस पथ पर जावें वीर अनेक!
3. प्रस्तुत कविता का भाव सारांश लिखिए।

*** ***** ***

इकाई 10 : यह द्वीप अकेला (अज्ञेय)

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 'अज्ञेय' का सामान्य परिचय

10.4 यह द्वीप अकेला (मूल पाठ)

10.5 कविता का सारांश

10.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

10.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

10.8 अभ्यास प्रश्न

10.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- अज्ञेय के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'यह द्वीप अकेला' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

10. 2 प्रस्तावना

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिन्दी में अपने समय के सबसे चर्चित कवि, कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार, संपादक तथा अध्यापक रहे हैं। 'अज्ञेय' प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। आइए, उनकी कविता 'यह द्वीप अकेला' को पढ़ने से पहले, उनके बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त करें।

10.3 'अज्ञेय' का सामान्य परिचय

'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च सन् 1911 को उत्तर प्रदेश में हुआ है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा पिता की देख रेख में घर पर ही हुई। वे संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा व साहित्य के ज्ञाता थे। सन् 1925 में पंजाब से वे एंट्रेंस की परीक्षा पास कर मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में दाखिल हुए। वहाँ से विज्ञान में इंटर की पढ़ाई पूरी कर सन् 1927 में बी.एससी. करने के लिए लाहौर चले गए थे। सन् 1929 में बी. एससी. करने के बाद एम.ए. में उन्होंने अंग्रेजी विषय रखा; पर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी हो सकी। क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर वे बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फरार भी हो गए थे। सन् 1930

ई. के अन्त में पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया था। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनुवाद किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी अज्ञेय की मृत्यु दिल्ली में 4 अप्रैल सन् 1987 को हुई।

अज्ञेयजी को सन् 1964 में 'आँगन के पार द्वार' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और सन् 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

प्रमुख कृतियाँ -

कविता संग्रह - भग्नदूत-1933, चिन्ता-1942, इत्यलम 1946, हरी घास पर क्षण भर-1949, बावरा अहेरी-1954, इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे-1957, अरी ओ करुणा प्रभामय-1959, आँगन के पार द्वार-1961, कितनी नावों में कितनी बार (1967) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970) सागर मुद्रा (1970) पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974) महावृक्ष के नीचे (1977) नदी की बाँक पर छाया (1981) प्रिज़न डेज़ एण्ड अदर पोयम्स (अंग्रेजी में,1946)।

कहानियाँ - विपथगा 1937 परम्परा 1944 कोठरी की बात 1945 शरणार्थी 1948 जयदोल 1951।

उपन्यास - शेखर एक जीवनी प्रथम भाग (उत्थान) 1941, द्वितीय भाग (संघर्ष) 1944, नदी के द्वीप 1951, अपने अपने अजनबी 1961।

यात्रा वृतान्त - अरे यायावर रहेगा याद 1953, एक बूँद सहसा उछली 1960।

निबंध संग्रह - सबरंग, त्रिशंकु 1945, आत्मनेपद 1960, आधुनिक साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल 1971 सब रंग और कुछ राग 1956, लिखी कागद कोरे 1972।

संस्मरण - स्मृति लेखा।

डायरी - भवंती, अंतरा और शाश्वनी।

विचार गद्य - संवत्सर

नाटक - उत्तरप्रियदर्शी

जीवनी - रामकमल राय द्वारा लिखित शिखर से सागर तक

संपादित ग्रंथ - आधुनिक हिन्दी साहित्य (निबन्ध संग्रह) 1942, तार सप्तक (कविता संग्रह) 1943, दूसरा सप्तक (कविता संग्रह)1951, तीसरा सप्तक (कविता संग्रह), सम्पूर्ण 1959, नये एकांकी 1952, रूपांबरा 1960।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

अज्ञेय ने अनेक जापानी .....कविताओं को अनुवाद किया था।

प्रश्न संख्या 2. अज्ञेय को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए-

1) बावरा अहेरी

2) अरी ओ करुणा प्रभामय

3) कितनी नावों में कितनी बार

4) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ

उनका लगभग समग्र काव्य सदानीरा (दो खंड) नाम से संकलित हुआ है तथा अन्यान्य विषयों पर लिखे गए सारे निबंध सर्जना और सन्दर्भ तथा केंद्र और परिधि नामक ग्रंथो में संकलित हुए हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादन के साथ-साथ अज्ञेय ने तारसप्तक, दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक जैसे युगांतरकारी काव्य संकलनों का भी संपादन किया तथा पुष्करिणी और रूपांबरा जैसे मौलिक और अनूठे काव्य-संकलनों का भी। वे वत्सलनिधि से प्रकाशित आधा दर्जन निबंध-संग्रहों के भी संपादक रहे हैं। यद्यपि अज्ञेय ने कहानियाँ कम ही लिखी हैं और अपने उत्तरकालीन जीवन में तो न के बराबर ही लिखी हैं, परंतु हिन्दी कहानी को आधुनिकता की दिशा में एक नया और स्थायी मोड़ देने का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। निस्संदेह वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के शलाका-पुरूष हैं, जिनके कारण हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद पुन: आधुनिक युग का प्रवर्तन हुआ।

10.4 यह दीप अकेला (मूल पाठ)

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति को दे दो।
यह जन है - गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गाएगा?
पनडुब्बा - ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लाएगा?
यह समिधा - ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा।
यह अद्वितीय - यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित :

यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

यह मधु है - स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस - जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,

यह अंकुर-फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत : इसको भी शक्ति को दे दो।

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,
वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा;

कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कडुवे तम में
यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,
उल्लम्ब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा।
जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय,
इसको भक्ति को दे दो :

यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता,
पर इसको भी पंक्ति को दे दो।



10.5 कविता का सारांश

'यह दीप अकेला' कविता में 'अज्ञेय' ऐसे दीप की बात करते हैं जो स्नेह भरा, गर्व भरा, मदमाता भी किंतु अकेला है। अहंकार का मद हमें अपनों से अलग कर देता है। कवि कहता है कि इस अकेला दीप को भी पंक्ति में शामिल कर लो। पंक्ति में शामिल करने से उस दीप की महत्ता एवं सार्थकता बढ़ जाएगी। दीप में सब कुछ हैं, सारे गुण एवं शक्तियाँ उसमें निहित हैं, उसकी व्यक्तिगत सत्ता भी कम नहीं है फिर भी पंक्ति की तुलना में वह एक है, एकाकी है।

दीप की पंक्ति या समूह में विलय ही उसकी ताकत का, उसकी सत्ता का सार्वभौमीकरण है, उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य का सर्वव्यापीकरण है। ठीक यही स्थिति मनुष्य का भी है। व्यक्ति में सबकुछ है, सर्वशक्तिमान, सर्वगुणसंपन्न है, फिर भी समाज में उसका विलय, समाज के साथ उसकी अंतरंगता से समाज मजबूत होगी, राष्ट्र मजबूत होगा। इस कविता के माध्यम से अज्ञेय ने व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने पर बल दिया है। दीप की पंक्ति में विलय

व्यष्टि का समष्टि में विलय है और आत्मबोध का विश्वबोध में रूपांतरण। निंदा. अपमान, अनादर के धुंधलाते कठोर अंधकार में यह हमेशा द्रवित अर्थात करुणा से भरा हुआ, दीर्घकाल से जागरूक, अनुराग युक्त नेत्रों वाला, गले लगाने को उठी हुई बाँहों वाला और दीर्घ समय से सम्पूर्ण आत्मीयता से भरा हुआ है। यह ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुक, जागृत, श्रद्धा से युक्त है। इसको भक्ति दे दो।

कवि कहता है कि यह दीपक अकेला है, स्नेह से परिपूर्ण है, गर्व से भरा हुआ है। इसमें अहं भाव भी है। पर इसको पंक्ति में जगह दे दो अर्थात् अकेले व्यक्ति को समाज में सम्मिलित कर लो। समाज में इसके विलय से समाज और राष्ट्र मजबूत होगा। कवि कहता है कि यह दीपक उस विश्वास का ही एक रूप है जो अपने छोटे होने के बावजूद काँपता नहीं। यह वह पीड़ा है, जिसकी गहराई को उसने स्वयं नाप लिया है अर्थात् दीपक रूपी व्यक्ति में आत्मविश्वास भरा हुआ है और इसमें गहरे दुख को भी सहन करने की क्षमता है। तात्पर्य यह है कि दीपक रूपी व्यक्ति में सभी अच्छे गुणों का समावेश है फिर भी इसे समाज में शामिल करने की आवश्यकता है। समाज के साथ इसकी अंतरंगता से समाज को मजबूती मिलेगी। मनोविश्लेषणवादी कवि 'अज्ञेय' समाज और व्यक्ति दोनों की प्रमुखता, एकजुट होकर आगे बढ़ने की बात कही है। जिससे समाज और व्यक्ति दोनों का लाभ होगा।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. प्रस्तुत कविता में निहित कवि की मनोवैज्ञानिक सोच को उल्लेख कीजिए।



10.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : हाइकु।

प्रश्न 2 का उत्तर : के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर : अज्ञेय मनोविश्लेषणवादी कवि है। उनकी कविता का भाव अधिक पोढ़ और इसमें अन्तर्निहित भाव अधिक शक्तिशाली है। कविता के सारांश को पढ़कर समझने की कोशिश कीजिए।



10.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. अज्ञेय कवि और काव्य, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, वाणी प्रकाशन।



10.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. 'शेखर एक जीवनी' कितने भागों में निकला है?
2. अज्ञेय लिखित नाटक का नाम उल्लेख कीजिए।

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. 'अज्ञेय' का सम्पूर्ण नाम क्या है? उनके साहित्य पर एक आलोचना प्रस्तुत कीजिए।
2. उल्लेखित कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. 'अज्ञेय' मनोविश्लेषणवादी कवि है - इस कविता के आधार पर अपना मत स्पष्ट कीजिए।
4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

   यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
   है गर्व भरा मदमाता,
   पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

*** ***** ***

इकाई 11 : मुक्तिबोध (सहर्ष स्वीकारा है)

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 मुक्तिबोध का सामान्य परिचय

11.4 सहर्ष स्वीकार है (मूल पाठ)

11.5 कविता का सारांश

11.6 प्रगति प्रतिवेदन (केवल रूपरेखा)

11.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

11.8 अभ्यास प्रश्न

11.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- मुक्तिबोध के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

11.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य जगत में 'मुक्तिबोध' की प्रसिद्धि प्रगतिशील कवि के रूप में हुए हैं। मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्ष व्यक्तित्व के धनी कवियों में से एक थे। हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक चर्चा के केन्द्र में रहने वाले मुक्तिबोध कहानीकार भी थे और समीक्षक भी। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' को प्रगतिशील और नयी कविता के बीच का एक सेतु माना जाता है। यहाँ हम उनकी कविता 'सहर्ष स्वीकारा हैं' को पढ़ने से पहले उनके जीवन और साहित्य के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

11.3 मुक्तिबोध का सामान्य परिचय

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जन्म 13 नवंबर, सन् 1917 को श्योपुर (ग्वालियर) में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा उज्जैन में हुई। मुक्तिबोध के पिता पुलिस विभाग के इंस्पेक्टर थे और बहुत शुस्ता फ़सीह उर्दू बोलते थे। मुक्तिबोध की माँ बुन्देलखण्ड ईसागढ़ के एक किसान परिवार से थी। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के चार भाई हैं। इनसे छोटे शरतचन्द्र मराठी के प्रतिष्ठित कवि हैं। पारिवारिक असहमति और विरोध के बावजूद सन् 1939 में

'मुक्तिबोध' की शादी शांता नामक एक लड़की से हुआ। मुक्तिबोध ने छोटी आयु में बडनगर के मिडिल स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1940 में मुक्तिबोध शुजालपुर के शारदा शिक्षा सदन में अध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद उन्होंने उज्जैन, कलकत्ता, इंदौर, बम्बई, बंगलौर, बनारस तथा जबलपुर आदि जगहों पर नौकरी की। सन् 1942 के आंदोलन में जब यह शारदा शिक्षा सदन बंद हो गया, तो वे उज्जैन चले गये। भिन्न-भिन्न नौकरियाँ कीं- मास्टरी से वायुसेना, पत्रकारिता से लेकर पार्टी तक। उन्होंने सूचना तथा प्रकाशन विभाग, आकाशवाणी एवं 'नया खून' में काम किया। अंत में कुछ महीने तक पाठ्य पुस्तकें लिखी। अंततः सन् 1958 से दिग्विजय महाविद्यालय, राजनाँदगाँव में प्राध्यापक हुए।

मुक्तिबोध की कविताओं में बीसवीं सदी की बेचैनी, तड़पन और समाज की सच्चाई को इमंदारिता के साथ वर्णन हुआ है। हालाँकि उनकी कविताओं का विषय मूल रूप से जटिल है। मगर उनमें जीवनानुभूति छिपी हुई हैं।



महत्वपूर्ण बिंदु

मुक्तिबोध की कविता सरस नहीं है, सुखद नहीं है। परन्तु लोगों को झकझोर कर एक नये पथ की मांग करती हैं। तारसप्तक में मुक्तिबोध ने स्वयं कहा है, 'मेरी कविताएँ अपना पथ खोजते बेचैन मन की अभिव्यक्ति हैं। उनका सत्य और मूल्य उसी जीव-स्थिति में छिपा है।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कविता-संग्रह - चाँद का मुह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक-धुल।

कथा-साहित्य - काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी।

आलोचना - कामायनी-एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ और एक साहित्यिक की डायरी।

काव्यगत विशेषता-

मुक्तिबोध प्रयोगवादी कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु है। इनकी प्रतिभा का परिचय अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से मिलता है। उनकी कविता में निहित मराठी संरचना से प्रभावित लंबे वाक्यों ने आम पाठक के लिए कठिन बनाया, लेकिन उनमें भावनात्मक और विचारात्मक ऊर्जा अटूट थी, जैसे कोई नैसर्गिक अंतः स्रोत हो जो कभी चुकता ही नहीं, बल्कि लगातार अधिकाधिक वेग और तीव्रता के साथ उमड़ता चला आता है। यह ऊर्जा अनेकानेक कल्पना-चित्रों और फैंटेसियों का आकार ग्रहण कर लेती है। इनकी रचनात्मक ऊर्जा का एक बहुत बड़ा अंश आलोचनात्मक लेखन और साहित्य-संबंधी चिंतन में सक्रिय रहे। ज्योकि गजानन माधव मुक्तिबोध पत्रकारिता से भी जुड़े हुए थे। इसी कारण इन्होंने राजनीतिक विषयों, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्यों तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर लगातार लिखता रहा। भावों के अनुरूप शब्द गढ़ना और उसका

परिष्कार करके उसे भाषा में प्रयुक्त करना उनकी अद्भुत विशेषता रही है। हिंदी, अरबी, फारसी और उर्दू के साथ साथ संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग उनके काव्यकला की विशेषता हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. मुक्तिबोध से संबंधित कौनसी बात सही है?

1) मास्टर की नौकरी करते थे

2) वायुसेना में भी कार्यरत थे

3) पत्रकारिता से भी जुड़े थे

4) उल्लेखित सभी

प्रश्न संख्या 2. मुक्तिबोध के प्रमुख पांच काव्यात्मक विशेषताएँ उल्लेख कीजिए?

प्रश्न संख्या 3. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' संग्रह के लिए मुक्तिबोध को कब ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था?

11.4 सहर्ष स्वीकारा है (मूल पाठ)

ज़िंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है-
संवेदन तुम्हारा है!

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँडेलता हूँ, भर-भर फिर आता
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है !

सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं

इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।
नहीं सहा जाता है।
ममता के बादल की मँडराती कोमलता-
भीतर पिराती है
कमज़ोर और अक्षम अब हो गई है आत्मा यह
छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है
बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है!

सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिल्कुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है!
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता-सा लगता है, होता-सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

शब्दार्थ - सहर्ष - खुशी के साथ, भीतर की सरिता - भावनाओं की नदी, अभिनव-नया, अयलक-निरंतर, दक्षिण ध्रुवी अंधकार - दक्षिण ध्रुव पर छाने वाला गहरा अंधेरा, अमावस्या-चंद्रमाविहीन काली रात, परिवेटित- चारों ओर से घिरा हुआ, आच्छादित- छाया हुआ, ढका हुआ, माँडराती- छाई हुई, पिराता- दर्द करना, सहलाती- दर्द को कम करती हुई, पाताली आँधेरा-धरती की गहराई में पाई जाने वाली धुंध, विवर- बिल, घेरा- फैलाव वैभव।



11.5 कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। यह कविता गजानन माधव मुक्तिबोध लिखित काव्य-संग्रह 'भूरी-भूरी खाक-धुल' से ली गयी है। उल्लेखित कविता में कवि ने अपने जीवन की तमाम अच्छी-बुरी स्थितियों के संघर्ष को स्वीकारने की बात कही है।

कवि कहता है कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है, वह मुझे सहर्ष स्वीकार है। मुझे जो कुछ भी मिला है, वह तुम्हारा दिया हुआ है अथवा ये सब तुम्हें प्यारा है। मेरी गवली गरीबी, विचार-वैभव, गंभीर अनुभव, दृढ़ता, भावनाएँ आदि सब पर तुम्हारा प्रभाव है। तुम्हारे साथ मेरा न जाने कौन-सा नाता है कि मैं जितनी भी भावनाएँ बाहर निकालने का प्रयास करता हूँ, वे उतने ही अधिक उमड़ती रहती हैं। कवि कहता है कि 'मैं तुम्हारे प्रभाव से दूर जाना चाहता हूँ, क्योंकि मैं भीतर से दुर्बल पड़ने लगा हूँ। तुम्हीं मुझे दंड दो ताकि मैं दक्षिण ध्रुव की अंधकारमयी अमावस्या की रात्रि के अँधेरों में लुप्त हो जाऊँ। मैं तुम्हारे उजालेपन को अधिक सहन नहीं कर पा रहा हूँ। तुम्हारी ममता की कोमलता भीतर से चुभने-सी लगी है। मेरी आत्मा कमजोर पड़ने लगी है।' वह स्वयं को पाताली अँधेरों की गुफाओं में लापता होने की बात कहता है, किंतु वहाँ भी उसे प्रियतम का ही सहारा है। कवि कहता है कि तुम्हारे साथ न जाने कौन-सा संबंध है या न जाने कैसा नाता है कि मैं अपने भीतर समाये हुए तुम्हारे स्नेह रूपी जल को जितना बाहर निकालता हूँ, उतने ही फिर चारों ओर से सिमटकर मेरे हृदय में भर जाता है। ऐसा लगता है मानों दिल में कोई झरना बह रहा है। वह स्नेह मीठे पानी के स्रोत के समान है जो मेरे अंतर्मन को तृप्त करता रहता है। इधर मन में प्रेम है और उधर तुम्हारा चाँद जैसा मुस्कराता हुआ चेहरा अपने अद्भुत सौंदर्य के प्रकाश से मुझे नहलाता रहता है। कवि का आंतरिक व बाह्य जगत-दोनों उसी स्नेह से युक्त स्वरूप से संचालित होता है। उसके जीवन में जो कुछ भी है या जो कुछ उसे अपना-सा लगता है, वे सब उसके कारण है। उसकी सत्ता, स्थितियाँ भविष्य की उन्नति या अवनति की सभी संभावनाएँ प्रियतमा के कारण हैं। कवि का हर्ष-विषाद, उन्नति-अवनति सदा उससे ही संबंधित हैं। कवि ने हर सुख-दुख, सफलता-असफलता को प्रसन्नतापूर्वक इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि प्रियतमा ने उन सबको अपना माना है।



11.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : पाने के लिए अध्ययन करे 'मुक्तिबोध का सामान्य परिचय'।

प्रश्न 2 का उत्तर : पाने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर : 1964।



11.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. भूरी-भूरी खाक धुल, गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 1980।



11.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. प्रस्तुत कविता किस शैली में लिखा गया है?
2. कवि के अंतर्मन को किस चीज से तृप्त होता है?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. कवि के पास जो कुछ भी है वे सब विशिष्ट और मौलिक क्यों हैं? 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।
2. कवि के रूप में गजानन माधव मुक्तिबोध का परिचय दीजिए।
3. 'भीतर वह, ऊपर तुम' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
4. कवि अतीत, वर्तमान और भविष्य की सभी उपलब्धियों को किस भाव से स्वीकारता है तथा इसके क्या कारण हो सकते हैं- उल्लेखित कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

*** ***** ***

इकाई 12 : फर्क नहीं पड़ता (केदार नाथ सिंह)

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 केदार नाथ सिंह का सामान्य परिचय

12.4 फर्क नहीं पड़ता (मूल पाठ)

12.5 कविता का सारांश

12.6 प्रगति प्रतिवेदन (केवल रूपरेखा)

12.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

12.8 अभ्यास प्रश्न

12.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- केदार नाथ सिंह के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'फर्क नहीं पड़ता' को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

12.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में केदार नाथ सिंह का विशेष महत्व है। अज्ञेय द्वारा संपादित तीसरे सप्तक के कवियों में से केदारनाथ सिंह भी काफी चर्चित हैं। उनकी कविता की विशेषता सरल, रोजमर्रा की भाषा और चित्रात्मकता हैं, जो जटिल विषय को व्यक्त करने के लिए एक साथ जुड़ती हैं। सन् 2014 के 10 नवंबर को भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यहाँ उल्लेखित 'फर्क नहीं पड़ता' कविता में ग्रामीण समाज के युगीन सच्चाई को दर्शाया गया है। आइए, कविता को पढ़ने से पहले हम कवि के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

12.3 केदार नाथ सिंह का सामान्य परिचय

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यकार केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई सन् 1934 में उत्तर प्रदेश के बलिया के अंतर्गत चकिया गाँव में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई, फिर उच्च शिक्षा के लिए बनारस में रहे। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् 1956 ई. में हिन्दी में एम.ए. और सन् 1964 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपना शोध ग्रंथ

'आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान' आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन में पूरा किया। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने बांग्ला सीखी और रवींद्रनाथ टैगोर के बांग्ला साहित्य को पढ़ने का प्रयास किया। वे ब्रिटिश कवि डाइलेन टामस, अमरीकी कवि वालेस स्टीवेंस और फ्रेंच कवि रेनेशा के प्रशंसक रहे थे, उनकी कुछ कविताओं का अनुवाद भी उन्होंने किया था। उनका निधन 19 मार्च सन् 2017 को दिली में उपचार के दौरान हुआ। केदारनाथ सिंह कुछ वक्त पडरौना में हिंदी के प्राध्यापक भी रहे। उन्होंने जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केंद्र में बतौर आचार्य और अध्यक्ष के रूप में काम किया।

रचनाएँ : केदारनाथ सिंह की कविता यात्रा का आरंभ एक गीतकार के रूप में हुआ। वह अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'तीसरा सप्तक' (1959) के सात कवियों में से थे। सप्तक में शामिल गीतों और कविताओं ने उन्हें साहित्यिक दुनिया से परिचित कराया। उनका प्रथम कविता संग्रह 'अभी, बिल्कुल अभी' सन् 1960 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कविताओं की नवीनता और तात्कालिकता ने तुरंत ही उन्हें एक अलग पहचान दिलाई। उनका दूसरा कविता संग्रह 'ज़मीन पक रही है' बीस वर्षों के लंबे संयम और अंतराल के बाद सन् 1980 में आया। इस संग्रह ने ही उन्हें समकाल के समादृत कवि के रूप में स्थापित किया। उन्हें 'अकाल में सारस' के लिए सन् 1989 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

कविता संग्रह	आलोचना	संपादन
● अभी बिल्कुल अभी (1960)	● कल्पना और छायावाद	● ताना-बाना (आधुनिक भारतीय कविता से एक चयन)
● जमीन पक रही है (1980)	● आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान	● समकालीन रूसी कविताएँ
● यहाँ से देखो (1983)	● मेरे समय के शब्द	● कविता दशक
● बाघ (1996), (पुस्तक के रूप में)	● मेरे साक्षात्कार	● साखी (अनियतकालिक पत्रिका)
● अकाल में सारस (1988) पत्रिका)		● शब्द (अनियतकालिक पत्रिका)
● उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ (1995)		
● तालस्ताय और साइकिल (2005)		
● सृष्टि पर पहरा (2014)		

12.4 फर्क नहीं पड़ता (मूल पाठ)

हर बार लौटकर
जब अन्दर प्रवेश करता हूँ
मेरा घर चौंकर कहता है 'बधाई'
ईश्वर
यह कैसा चमत्कार है
मैं कहीं भी जाऊं
फिर लौट आता हूँ
सड़कों पर परिचय-पत्र माँगा नहीं जाता
न शीशे में साबुत की जरुरत होती है
और कितनी सुविधा है कि हम घर में हों
या ट्रेन में
हर जिज्ञासा एक रेलवे टाइम टेबुल से
शांत हो जाती है
असमान मुझे हर मोड़ पर
थोड़ा-स लपेटकर बाकी छोड़ देता है
अगला कदम उठाने
या बेथ जाने के लिए
और यह जगह है जहाँ पहुँचकर
पत्थरों की चीख़ साफ सुनी जा सकती है
पर सच तो यह है कि यहाँ
या कहीं भी फर्क नहीं पड़ता
तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार'
वह लिख दो 'सड़क'
फर्क नहीं पड़ता
मेरे युग का मुहावरा है
फर्क नहीं पड़ता
अक्सर महसूस होता है
कि बगल में बैठे हुए दोस्तों के चेहरे
और अफ्रीका की धुंधली नदियों के छोर
एक हो गए हैं
और भाषा जो मैं बोलना चाहता हूँ

मेरी जिह्वा पर नहीं
बल्कि दांतों के बीच की जगहों में सटी है
मैं बहस शुरू तो करूँ
पर चीजें एक ऐसे दौर से गुजर रही हैं
कि सामने की मेज को
सीधा मेज कहना
उसे वहाँ से उठाकर
अज्ञात अपराधियों के बीच में रख देना है
और यह समय है
जब रक्त की शिराएँ शारीर से कटकर
अलग हो जाते हैं
और यह समय है
जब मेरे जुटे के अन्दर की एक नन्ही-सी
कील
तारों को गड़ने लगती है।



12.5 पाठ का सारांश

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि मनुष्य वर्तमान समय में इतना मशीनी यानि की व्यावहारिक हो गए हैं कि किसी भी बातों से उनमें कोई संवेदनशीलता की महसूस नहीं होती है। इसी कारण कवि 'फर्क नहीं पड़ता' कविता को लिखकर इसे 'वर्तमान युग के मुहावरा' कहा है।

कवि को लगता है कि घर लौटने के बाद उनकी वधाई के लिए बस एक निर्जीव घर ही है। उसके अकलेपन की सहारा उस घर के लिए उन्होंने भगवान की कृतज्ञता को स्वीकारते हुए उन्हें धन्यवाद दिया है। इस व्यस्तभरी दुनिया में सब अकेले और अजनवी हो गए हैं। रास्ते पर भी कोई अपना नहीं मिलता, ऐसा नहीं है। कवि के अनुसार अपनों में कोई बनावटीपन नहीं होना चाहिए। मनुष्य को कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे घर में हैं या ट्रेन में, हर जिज्ञासा मशीन से प्राप्त होता जा रहा है। सूचना की दुनिया में लोगों को हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. मुहवरा से आप क्या समझते हैं ?

प्रश्न संख्या 2. 'अकाल में सारस' के लिए लिए सन् 1989 में

कवि को किस सम्मान से सम्मानित किया गया ?

प्रश्न संख्या 3. सूचना की दुनिया में लोगों को सुबिधा तो प्राप्त हो रहा है मगर क्या संवेदनशीलता खत्म होती जा रही है ? विचार कीजिए।

कुछ समय के लिए लगता है समाज अथवा सम्बन्ध थोड़े समय के लिए हैं मगर कुछ क्षण के बाद ही उसे एहसास होता है कि सब झूठा है, मिथ्या है। मुझे स्वयं ही निर्णय लेना है कि मैं क्या करू, पत्थरों से कठोर हो गए हैं लोगों के हृदय। मनुष्य की संवेदनशीलता में और पत्थरों में फर्क नजर नहीं आ रहे हैं। कवि के अनुसार प्यार के जगह पर अगर सड़क लिख दिया जाय तो दोनों का अर्थ वर्तमान में लगभग एक ही होगा, संवेदनहीन, निर्जीव और कठोर है। कवि को अपने दोस्तों के साथ बिताते समय अफ्रीका के धुंधली नदी-सा उसके दिमाग में आते हैं। सब अपरिचित, सब अपने में व्यस्त। कुछ बोलना चाहते हुए भी रुक जाता है, दिमाग में कुछ हैं और निकलता कुछ और कवि के अनुसार बातें दांतों में फँस जाती हैं।

इस समाज में सार्थक तर्क नहीं कर सकते हैं। विरोध करने का मतलब है रिश्तों से अलग होना अथवा झगड़ा करना। कवि व्यथित है - खुद के भाव को लेकर, मनुष्यता को लेकर, लोगों की संवेदनहीनता को लेकर, लोगों की बनावटीपन को लेकर, नैतिकता को लेकर। इसी पीड़ा को कवि ने प्रस्तुत कविता में व्यक्त किया है।



12.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : अपने जीवनानुभव से लिखे।

प्रश्न 2 का उत्तर : 'अकाल में सारस' के लिए सन् 1989 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 3 का उत्तर : इकाई को पढ़कर अपने बोध-शक्ति से लिखने की कोशिश कीजिए।



12.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. प्रतिनिधि कविताएँ- संपादक, परमानंद श्रीवास्तव, रचनाकार केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1985।



12.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. किस वर्ष केदारनाथ सिंह जी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ ?
2. फर्क नहीं पड़ता से क्या आशय निकलता है ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. केदारनाथ सिंह का परिचय देते हुए उनके साहित्य पर चर्चा कीजिए।
2. 'फर्क नहीं पड़ता' कविता में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
3. प्रस्तुत कविता में वर्तमान जीवन की वास्तविकता को किस तरह दर्शाया गया है- आलोचना कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए

   और भाषा जो मैं बोलना चाहता हूँ
   मेरी जिह्वा पर नहीं
   बल्कि दांतों के बीच की जगहों में सटी है

*** ***** ***

इकाई 13 : घर की याद (भवानी प्रसाद मिश्र)

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 भवानी प्रसाद मिश्र का सामान्य परिचय

13.4 घर की याद (मूल पाठ)

13.5 कविता का सारांश

13.6 प्रगति प्रतिवेदन (केवल रूपरेखा)

13.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

13.8 अभ्यास प्रश्न

13.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- भवानी प्रसाद मिश्र के जीवन और साहित्य के बारे में जानेंगे।
- उनकी कविता 'घर की याद' को पढ़कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचय प्राप्त करेंगे।

13.2 प्रस्तावना

गांधीवादी विचारक भवानी प्रसाद मिश्र जी दूसरे तार-सप्तक के प्रमुख कवि हैं। उनके द्वारा लिखित प्रस्तुत कविता में घर के मर्म को उद्घाटन किया है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सताने लगी थी। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते थे। उसी पीड़ा का वर्णन हमें इस कविता में नजर आती हैं। कविता को पढ़ने से पहले, आइए उनके बारे में जान लेते हैं।

13.3 भवानी प्रसाद मिश्र का सामान्य परिचय

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, लेखक और नाटककार भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च, सन् 1913 को होशंगाबाद में हुआ था। गांधीवाद की स्वच्छता, नैतिकता, संस्कार आदि उनके व्यक्तित्व में नजर आते हैं। उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिंदी विषय को लेकर बी.ए. करने के उपरांत एक विद्यालय खोल लिया। स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लेने के कारण वे जेल भी गए थे। उन्होने 20 फरवरी सन् 1985 को इस संसार से हमेशा के लिए अलविदा किया।

भवानी प्रसाद मिश्र ने कविता लिखने की शुरुवात सन् 1930 से की थी, जो 'हिन्दू पंच' से प्रकाशित हुए थे। उनकी कविताएँ 'हंस' और 'दूसरे सप्तक' में प्रकाशित होती रही। सन् 1972 में उन्हें 'बुनी हुई रस्सी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- गीत-फरोश, चकित है दु:ख, गाँधी पंचशती, अँधेरी कविताएँ, बुनी हुई रस्सी, व्यक्तिगत, खुशबु के शिलालेख, परिवर्तन जिए, अनाम तुम आते हो, मानसरोवर, दिन, सम्प्रति आदि।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. सन् 1972 में उन्हें 'बुनी हुई रस्सी' के लिए मिश्रजी को कौन-सा सम्मान प्राप्त हुआ था।

प्रश्न संख्या 2. निम्नलिखित में से भवानी प्रसाद मिश्र के नहीं हैं-

1) सुबह
2) अनाम तुम आते हो
3) दिन
4) सम्प्रति

13.4 घर की याद (मूल पाठ)

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है,
प्राण मन घिरता रहा है,

बहुत पानी गिर रहा है,
घर नजर में तीर रहा है,
घर की मुझसे दूर हो जो,
घर खुशी का पुर है जो,

घर की घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर!

घर की घर में सब जुड़े हैं,
सब की इतने कब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिनें,

भुजा भाई प्यार बहिनें,

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दु:ख में वह गढ़ी मेरी
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दु:ख नहीं फिर,

माँ की जिसकी स्नेह-धारा,
यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो की उसका पत्र पाता।

पिता जि जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ
जो अभी भी खिलखिलाएँ,

मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

आज गीता पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
सब मुगदर हिला लेकर,
मुठ उनकी मिला लेकर,

जब की निचे आये होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,

चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें
खेलते या खड़े होंगे
नजर उनको पड़े होंगे,

पिता जी जिनको बुढ़ापा,

एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पांचवें का नाम लेकर,
पांचवां मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिता जी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बंधा बैठा हूँ अभागा,

और माँ ने कहा होगा,
दु:ख कितना बहा होगा,
आंख में किस लिए पानी
वहाँ अच्छा है भवानी
वह तुम्हारा मान समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है,
यह तुम्हारी लीक ही है,
पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ ण कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चें,

पिता जी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पवन,
तुम बरस लो वे ण बरसें
पांचवें को वे ण तरसें,

मैं मज़े में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,

किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,
किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग कहना,
मत करो कुछ शोक कहना,

शब्दार्थ – प्राण मन धिरना – मन–प्राण में छा जाना, गढ़ी – डूबी, पसारा – फैलाव, झांझा – तूफान, लरजता – काँपता।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 3. भवानी प्रसाद मिश्र जी के घर में कितने भाई–बहन थे ? पठित कविता के आधार पर लिखिए।

प्रश्न संख्या 4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है।



13.5 कविता का सारांश

भवानी प्रसाद मिश्र ने प्रस्तुत कविता में अपने घर और परिवार के प्रति प्रेम और लगाव का वर्णन किया है। उन्होंने यह कविता सन् 1942 में अपने जेल प्रवास के दौरान लिखी थी। आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें तीन साल के लिए जेल में डाल दिया गया था। इसी दौरान उन्हें श्रावण के मौसम में तेज बारिश होती देख अपने घर और परिवार की याद आने लगी। वे अपने घर से दूर होते हुए भी श्रावण के मौसम को संदेशवाहक बनाकर माता- पिता को अपनी कुशलता का संदेश भेजते हैं। इसी दौरान एक रात बहुत तेज बारिश होता है और कवि को अपने

घर और परिवार की याद सताने लगता है। कवि को लगा कि अपने घर में स्थित चिन्ताग्रस्त माता-पिता तथा पुत्र वियोग की तड़प और किसी अनहोनी की आशंका से दु:खी हो रहे होंगे। लेकिन वे श्रावण को अपना संदेशवाहक बनाकर अपने माता पिता को अपनी संकुशल व मस्त होने का झूठा संदेश भेजने की कोशिश करते हैं ताकि उनके माता-पिता अपने प्रिय बेटे की याद कर दुखी न हो। वे नहीं चाहते हैं कि उनके माता-पिता उनके अकेलेपन व उनके मन की पीड़ा के बारे में जानें। कहते हैं कि वे कुशल हैं ताकि यह सुनकर उनके माता-पिता को सांत्वना मिल सके। कवि अपनी बहन को याद करता है कि वो मायके आयी होगी। अपनी अनपढ़ माँ को याद कर के सोचता है कि वे तो पत्र भी नहीं लिख सकते हैं वरना कम से कम पत्र द्वारा ही उनका खबर करते। कवि अपने पिता को याद करता है कि वे बुढ़ापे से बिल्कुल दूर हैं। न शेर से डरते हैं न मौत से। दौड़ते हैं खिलखिलाते हैं और उनकी आवाज आज भी बहुत ही रौबदार हैं। कवि बारिश से कहता है कि तुम खूब बरसो और बरस बरस के मेरे माता-पिता को मेरी कुशलता का संदेश दो, उनसे कहो कि मैं स्वस्थ हूँ, खुश हूँ। उन्हें मेरे दु:ख और निराशा का आभास न होने देना। इस प्रकार कविता में घर से जुड़ी यादों और विचारों को दुबारा ताजा करने का प्रयास किया गया है।

असल में भवानी प्रसादजी नहीं चाहते थे कि उनके बारे में जानकर या सोचकर घरवाले दुखी हो जाए। हालाँकि वे सबके साथ न होने से, बहनों को कुछ मदद न कर पाने से, अथवा माता-पिता की सेवा से वंचित होते हैं। सामान्य रूप से भवानी प्रसाद जी ने इसे साधारण विषय मानकर बस कहता है और इसी साधारण बस ने सबको वेबस बन के रखा है। प्रकृत अर्थ में घर की अवधारणा के सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है।



13.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : सन् 1972 में उन्हें 'बुनी हुई रस्सी' के लिए मिश्रजी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

प्रश्न 2 का उत्तर : जानने के लिए इकाई को ध्यान से पढ़े।

प्रश्न 3 का उत्तर : जानने के लिए कविता को पढ़े।

प्रश्न 4 का उत्तर : प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'आधुनिक काव्यधारा' अंतर्गत 'घर की याद' शीर्षक से ली गयी है। जिसके कवि भवानी प्रसाद मिश्र हैं।

प्रस्तुत कविता में भवानी प्रसाद मिश्र जी के बेबसी की मनोदशा का वर्णन मिलता है।

व्याख्या - खुद कीजिए (सारांश को अच्छे से समझकर)।



13.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. मन एक मैली कमीज है, संपादक नन्द किशोर आचार्य, रचनाकार भवानी प्रसाद मिश्र, वाग्देवी प्रकाशन, संस्करण 1998



13.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म कब हुआ था ?
2. भवानी प्रसाद मिश्र ने किस मौसम को संदेशवाहक बनाकर माता-पिता से अपनी कुशलता का संदेश भेजा था ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. भवानी प्रसाद मिश्र के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए उनके साहित्य पर चर्चा कीजिए।
2. 'घर की याद' कविता में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
3. इस कविता में पारिवारिक प्रेम को किस तरह दर्शाया गया है- आलोचना कीजिए।
4. व्याख्या प्रस्तुत कीजिए

   काम करता हूँ कि कहना,
   नाम करता हूँ कि कहना,
   चाहते हैं लोग कहना,
   मत करो कुछ शोक कहना,

*** ***** ***

इकाई 14 : धूमिल (रोटी और संसद)

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 'धूमिल' का सामान्य परिचय

14.4 रोटी और संसद (मूल पाठ)

14.5 कविता का सारांश

14.6 प्रगति प्रतिवेदन (केवल रूपरेखा)

14.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

14.8 अभ्यास प्रश्न

14.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप –

- धूमिल के जीवन और साहित्यिक कार्य के बारे में जानेंगे।
- 'रोटी और संसद' कविता को पढ़ कर उसका रस ले पाएंगे।
- कविता में निहित संवेदना से परिचित होंगे।

14.2 प्रस्तावना

'धूमिल' जी हिंदी के समकालीन कवियों में से एक थे। उनकी कविता में आजादी के मोहभंग की पीड़ा, आक्रोश की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। व्यवस्था ने जिनको पीछा है, दर्द अथवा पीड़ा दी हैं 'धूमिल' की कविता उन सभी को आइना दिखाता है।

14.3 'धूमिल' का सामान्य परिचय

'धूमिल' का सम्पूर्ण नाम सुदामा पांडेय 'धूमिल' था। 'धूमिल' उनका उपनाम है जिसे उन्होंने खुद चुना था। उनका जन्म 9 नवंबर सन् 1936 को वाराणसी के खेवली ग्राम में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। परिवार का जीविकोपार्जन किसानी और दुकान पर निर्भर था। उन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त की।

तेरह वर्ष की उम्र में ही 'धूमिल' ने शादी कर लिया और उसके तुरंत बाद ही उनके पिता शिवनायक पाण्डेय की मृत्यु हुई। पिता की अनुपस्थिति में परिवार का उत्तरदायित्व उनके कन्धे पर ही आ गया था। उन्होंने कलकत्ता के लोहे के एक कारख़ाने में मज़दूरी की, फिर कुछ दिनों बाद एक ट्रेड कंपनी में नौकरी लग गया। बाद में उन्होंने आई.टी.आई. से इलेक्ट्रिक डिप्लोमा

किया और अनुदेशक की नौकरी प्राप्त की। आर्थिक तनाव एवं रोजगारों के संकट से गुजरते व्यवस्था और पूँजीवादी संरचना के प्रति उनका गहरा आक्रोश धीरे-धीरे बढ़ता गया।

सामाजिक परिस्थितियों के खिलाफ उत्पन्न आक्रोश और अराजक समाज व्यवस्था के प्रति गुस्सा उनकी कविताओं में फुट पड़ी हैं। धूमिल का 39 वर्ष की अल्पायु में ब्रेन ट्यूमर से निधन हो गया। उनके जीवनकाल में एक ही काव्य- संग्रह 'संसद से सड़क तक' (1972) प्रकाशित हुआ। मरणोपरांत उनके तीन अन्य संग्रह 'कल सुनना मुझे' (1977), 'सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र' (1984) और धूमिल समग्र (तीन खंडों में 2021) संकलित हुए। कल सुनना मुझे के लिए सन् 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।



अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न संख्या 1. 'धूमिल' का सम्पूर्ण नाम क्या था?

प्रश्न संख्या 2. 'कल सुनना मुझे' के लिए 'धूमिल' को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब मिला था।

प्रश्न संख्या 3. मैं पूछता हूँ यह तीसरा आदमी कौन है?.. तीसरा आदमी से तात्पर्य क्या है?

14.4 रोटी और संसद (मूल पाठ)

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है
न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
तो मेरे देश की संसद मौन है।



14.5 पाठ का सारांश

देश जब आजाद हुआ था उन दिनों यह रोटी बेलने वाला आदमी किसान हुआ करता था, ये आज आम मजदूर या सर्वहारा के नाम से जाना जाता है जो कि रोटी पैदा कर रहा है। ये रोज नए सिरे से कुआं खोदने की स्थिति में जी रहे होते हैं और आए दिन आत्महत्या करने को

मजबूर हैं। आबादी का एक बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय चिंतन के दायरे से बाहर है। इनकी चिन्ता की जाती है तो सिर्फ औपचारिक खानापूर्ति के लिहाज से, खासकर चुनाव के अवसर पर। रोजगार गारन्टी योजना, स्वर्ण जयंती रोजगार योजना, आदि चलाकर इनसे तटस्थता का यह खेल संसद में बैठा हुआ आदमी खेलता है। दूसरा रोटी खानेवाला आदमी उपभोक्ता होता है। एक अदद नौकरी के लिए, एक प्याली चाय, शराब, मुनाफाखोरी में हिस्सा पाने के लिए अक्सर अपनी रचनात्मक जोश बेचनेवला ये मध्यम वर्ग ही दूसरा आदमी है, जिन्हें गुलामी सहन की आदत होती है। तीसरा जो रोटी न बेलता है, न खाता है, ये सिर्फ रोटी से खेलता है। 'धूमिल' की कविता में मिलनेवाला मुनाफाखोर की सामंतशाह व पूंजीपति जो दिन-प्रतिदिन अराजक होकर राजनीति का प्रतिफल प्रजातंत्र में निहित भ्रष्टाचार जो उसे फेसीवाद की ओर ले जा रहा है, जिसका परिणाम तानाशाही प्रजातांत्रिक अधिनायकत्व वाद में दिखाई पड़ता है। तीसरा आदमी इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

आज का पूंजीवाद उत्पादक किसान की सामूहिकता को तोड़कर उसे क्षूद्र मानव यानि की मजदूर बना दिया है। फिर उसे मनुष्य से जानवर में तब्दील करने की जिद ने उसकी यथार्थवादी, सामाजिक, ऐतिहासिक विकास की सारी भूमिका को समाप्त कर रोटी खाते दूसरे आदमी, पेटी बुर्जुआ के साथ बंधक मजदूर बनाकर पूंजीवादी जहनियत का पोषक बना दिया है और इसके मूल में रोटी यानि की पेट ही है। इसे पूंजीपति सामंतशाह पैदा नहीं कर सकता, चालाकी से दूसरे आदमी के साथ केवल रोटी को छीन सकता है। रोटी के तमाम क्षेत्रों को अधिग्रहित कर पहले व दूसरे आदमी को पशु बनाए रखने के लिए एक से बढ़कर एक चमत्कार बांटता है। प्रस्तुत कविता स्वातंत्रोत्वर भारतीय राजनीति और संविधान का पूंजीवाद से कदमताल करते चले जाने का एक छोटा किन्तु पुख्ता उदाहरण है। जब हमारे देश की संसदों के सामने यह सवाल रखा जाय कि यह तीसरा आदमी कौन है, तो वे मौन व्रत धारण करते हैं।



14.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : 'धूमिल' का सम्पूर्ण नाम सुदामा पांडेय 'धूमिल' था।

प्रश्न 2 का उत्तर : सन् 1979 में।

प्रश्न 3 का उत्तर : सारांश को ध्यान से पढ़े और समझे।



14.7 अधिक जानने के लिए पढ़े

1. संसद से सड़क तक (समीक्षा एवं व्याख्या)-लेखक डॉ. घनश्याम प्रेमी, हरीश प्रकाशन मंदिर, 2021।



14.8 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. कवि के परिवार का जीविकोपार्जन किस पर निर्भर था ?
2. रोटी बेलनेवाला आदमी किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. धूमिल जी का परिचय दीजिए।
2. 'रोटी और संसद' कविता में निहित भावार्थ को स्पष्ट कीजिए।
3. धूमिल किस समय के कवि हैं उनकी कविताओं की क्या-क्या विशेषताएँ रही हैं- सतर्क उत्तर दीजिए।
4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

   वह सिर्फ रोटी से खेलता है
   मैं पूछता हूं
   यह तीसरा आदमी कौन है ?
   तो मेरे देश की संसद मौन हैं।

*** ***** ***